RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

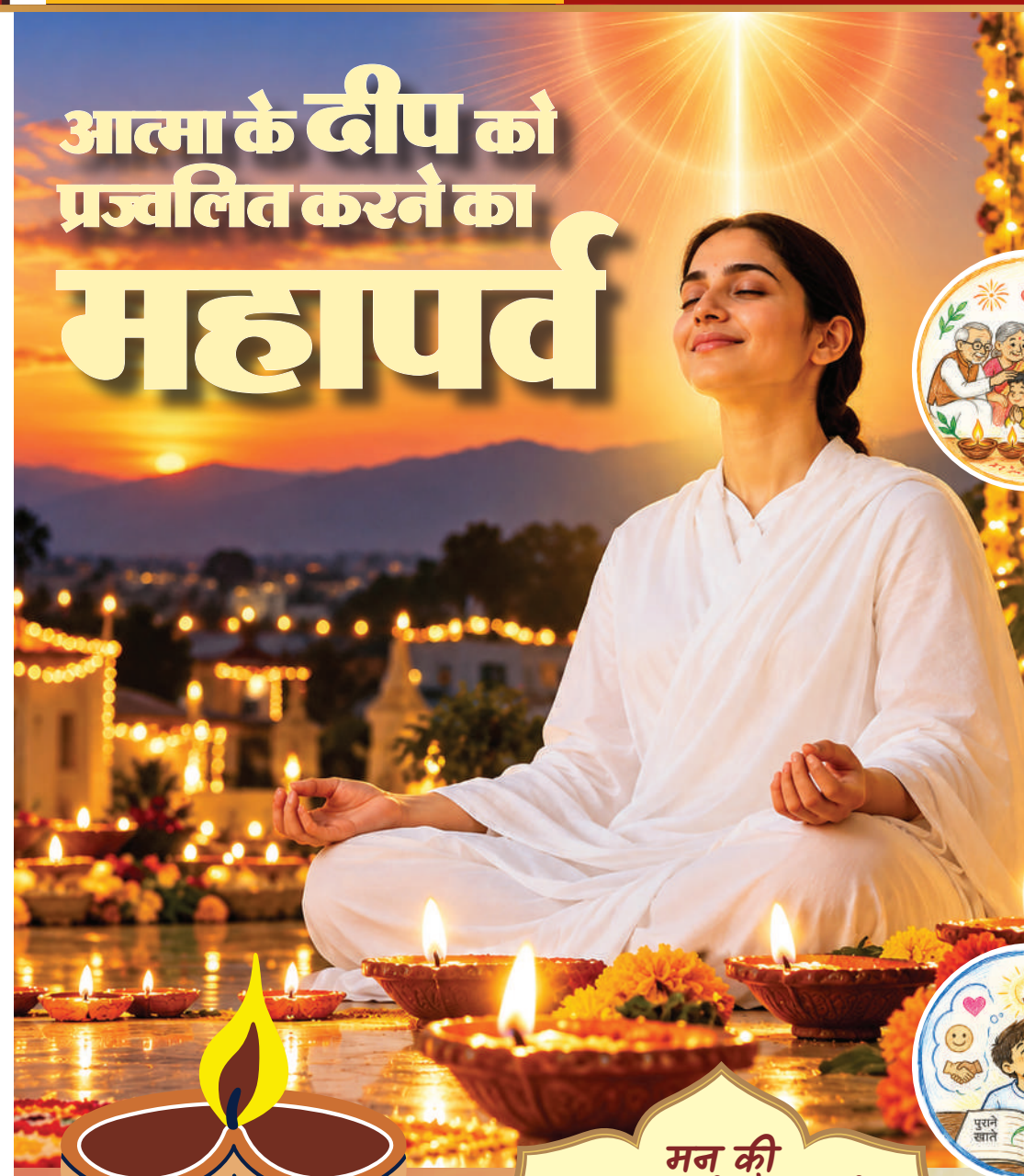
शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष-13, अंक-11, हिन्दी (मासिक), नवंबर 2026, पृष्ठ 16, मूल्य- 17:50

परमात्मा शिव के ज्ञान, राजयोग और पवित्रता से जीवन में आएगा सच्चे सुख-शांति का उजियारा

बाहरी जगमगाहट के साथ अंतर्मन में भी ज्ञान, शांति और पवित्रता का प्रकाश फैलाएं

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान



आत्मा के दीप को प्रज्वलित करने का महापर्व

दीपावली भारतीय संस्कृति का ऐसा महापर्व है, जो अंधकार पर प्रकाश, निराशा पर आशा और असत्य पर सत्य की विजय का संदेश देता है। इस अवसर पर घर-आंगन दीपों से सजते हैं, बाजारों में रौनक छा जाती है और हर ओर खुशियों का वातावरण दिखाई देता है। लेकिन क्या दीपावली का उद्देश्य केवल घरों को रोशन करना और उत्सव मनाना है? क्या बाहरी जगमगाहट के साथ हमारे अंतर्मन में भी ज्ञान, शांति और पवित्रता का प्रकाश है? दीपावली केवल बाहरी प्रकाश का पर्व नहीं, बल्कि आत्म जागृति, परमात्मा से संबंध और जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा देने वाला अवसर भी है।

आत्मा के दीप को जगाने का पर्व

आत्मा के मूल गुण शांति, प्रेम, पवित्रता, सुख और आनंद हैं। जब मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर स्वयं को केवल शरीर, पद, प्रतिष्ठा और भौतिक उपलब्धियों तक सीमित मानने लगता है, तब जीवन में तनाव, क्रोध, ईर्ष्या और असंतोष बढ़ने लगता है। जिस प्रकार दीपक अंधकार को दूर करता है, उसी प्रकार आत्मज्ञान जीवन से अज्ञान और भ्रम को दूर करने की प्रेरणा देता है। आज भौतिक सुविधाओं के विस्तार के बावजूद मानसिक शांति की तलाश बढ़ रही है। ऐसे में दीपावली हमें अपने भीतर झांकने और आत्मिक गुणों को जागृत करने का अवसर देती है। सच्चा प्रकाश तब है, जब हमारे विचार सकारात्मक हों, वाणी मधुर हो और व्यवहार में प्रेम तथा सम्मान दिखाई दे। बाहरी सफाई के साथ-साथ मन में व्याप्त नकारात्मक विचारों, द्वेष भावना, बदले की भावना की भी सफाई कर सद् विचारों का आगमन करें।

मन की सफाई भी है जरूरी

बाहरी सफाई के साथ मन में जमा द्वेष, नाराजगी और नकारात्मक विचारों को दूर करना भी आवश्यक है। कई बार छोटी-सी बात वर्षों तक संबंधों में कटुता बनाए रखती है। यह पर्व हमें क्षमा, संवाद और आपसी सद्भाव का महत्व समझाता है। अपनी गलती स्वीकार करना, दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना और संबंधों में सुधार के लिए आंतरिक स्वच्छता महत्वपूर्ण कदम हैं।

परमात्मा शिव की याद से मिले आंतरिक शक्ति

दीपावली पर परमात्मा शिव की याद हमें प्रेरित करती है कि हम बाहरी साधनों के साथ अपने आंतरिक जीवन को भी समृद्ध बनाएं। परमात्मा को शांति एवं प्रेम के स्रोत के रूप में याद करना मन को स्थिर करने का आध्यात्मिक अभ्यास है। जब व्यक्ति अपने जीवन में धैर्य, सहनशीलता, विनम्रता और करुणा को अपनाता है, तब वह स्वयं भी शांत रहता है और दूसरों के जीवन में भी सकारात्मकता फैलाता है। यही ज्ञान का वह दीप है, जो एक दिन नहीं, बल्कि पूरे वर्ष जीवन को आलोकित कर सकता है।

सच्ची समृद्धि

समृद्धि का अर्थ केवल धन-संपत्ति नहीं, बल्कि श्रेष्ठ संस्कार, संतोष, मधुर संबंध और ईमानदार जीवन भी है। धन के साथ विवेक, नैतिकता और संतोष न हो तो वह स्थायी सुख नहीं दे सकता। दीपावली पर यह संकल्प भी लें कि हम ईमानदारी से आजीविका अर्जित करेंगे, धन का सदुपयोग करेंगे और जरूरतमंदों की सहायता करेंगे।

परिवार में प्रेम और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी

दीपावली परिवारों को जोड़ने और खुशियां बांटने का अवसर है। इस दिन बड़ों का आशीर्वाद लेना, बच्चों को अच्छे संस्कार देना और परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताना पर्व की सार्थकता बढ़ाता है। उपहारों की कीमत से अधिक महत्वपूर्ण है उनमें निहित प्रेम और अपनापन। मधुर वाणी और सहयोगपूर्ण व्यवहार संबंधों में वास्तविक मिठास लाते हैं। उत्सव मनाते समय पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी भी जरूरी है। मिट्टी के दीप जलाना, अनावश्यक ऊर्जा खपत से बचना, स्वच्छता बनाए रखना आध्यात्मिक संवेदनशीलता का परिचायक है। सच्ची खुशी वही है, जिससे दूसरों को कष्ट न पहुंचे।

हर दिन बने दीपावली



दीपावली पर व्यापारी पुराने बही-खातों का समापन कर नए खाते आरंभ करते हैं। इसी प्रकार हमें भी अपने जीवन का लेखा-जोखा करना चाहिए। हमने कितने लोगों की सहायता की? कितनी बार क्रोध के स्थान पर शांति को चुना? क्या हमारे व्यवहार से किसी को खुशी मिली? ऐसे प्रश्न आत्मचिंतन और सुधार का अवसर देते हैं। आइए, इस दीपावली प्रतिदिन कुछ समय राजयोग ध्यान का अभ्यास करने, सकारात्मक विचार रखने, मधुर वाणी बोलने और श्रेष्ठ कर्म करने का संकल्प लें। केवल घरों को नहीं, अपने विचारों को भी प्रकाशित करें। केवल मिठाइयां नहीं, प्रेम और शुभभावनाएं भी बांटें।

बाहरी दीपों के साथ आत्मा के दीप को भी प्रज्वलित करें



आत्मिक जागृति, परमात्मा की याद और श्रेष्ठ कर्मों से जीवन में शांति तथा पवित्रता को बढ़ाया जा सकता है। जब व्यक्ति स्वयं में सकारात्मक परिवर्तन लाता है, तब उसका प्रभाव परिवार और समाज पर भी पड़ता है। इस दीपावली बाहरी दीपों के साथ आत्मा के दीप को भी प्रज्वलित करें। ज्ञान से अज्ञान को, प्रेम से द्वेष को और शांति से अशांति को दूर करने का प्रयास करें। यही दीपावली का वास्तविक आध्यात्मिक संदेश है- दीप घर को रोशन करे और ज्ञान जीवन को। इन्हीं शुभ संकल्पों, श्रेष्ठ भावना के साथ दीपावली को जीवनभर के लिए यादगार बनाएं।





वडोदरा में राष्ट्रपति ने किया रिट्रीट सेंटर का उद्घाटन

विश्व नव निर्माण हेतु आध्यात्मिक जागरण अभियान का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, वडोदरा, गुजरात।

भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि आज दुनिया को आर्थिक विकास के साथ मानवीय विकास की भी आवश्यकता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो केवल बुद्धि का विकास न करे, बल्कि विवेक को भी जागृत करे। मनुष्य को दूसरों पर नियंत्रण करने के बजाय स्वयं पर नियंत्रण करना सीखना चाहिए। सच्ची आध्यात्मिकता वही है, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है और उसके भीतर करुणा, संवेदनशीलता तथा सकारात्मक सोच का संचार करती है। राष्ट्रपति 23 सितंबर 2026 को वडोदरा के ताजपुरा रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज अलकापुरी सबजोन के नवनिर्मित ग्लोबल स्पिरिचुअल पैलेस रिट्रीट सेंटर के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रही थीं। इस अवसर पर उन्होंने ब्रह्माकुमारीज के 'विश्व नवनिर्माण हेतु आध्यात्मिक जागरण' अभियान का भी शुभारंभ किया।

आध्यात्मिक जागृति से संभव है सकारात्मक परिवर्तनः राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि वर्तमान विश्व तनाव, चिंता, हिंसा, असहिष्णुता और सामाजिक विभाजन जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में ध्यान, आत्मचिंतन, करुणा और सकारात्मक सोच को प्रोत्साहित करने वाले प्रयासों का विशेष महत्व है। जब व्यक्ति अपने विचारों और कर्मों में सकारात्मक परिवर्तन लाता है तथा उसके भीतर आशा और आत्मसम्मान जागृत होता है, तो वह समाज में भी सकारात्मक बदलाव का माध्यम बन सकता है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा लगभग 90 वर्षों से किए जा रहे आध्यात्मिक एवं मानवीय सेवाकार्यों की सराहना करते हुए कहा कि संस्था ध्यान और आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से व्यक्तिगत परिवर्तन तथा विश्व नवीनीकरण का संदेश भारत ही नहीं, बल्कि अनेक देशों तक पहुंचा रही है।



स्वयं पर नियंत्रण करना सीखें: राष्ट्रपति

समारोह में राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि जीवन में ऐसी शक्ति की आवश्यकता है, जो दूसरों को नियंत्रित करने के बजाय स्वयं पर नियंत्रण करना सिखाए। आध्यात्मिकता मनुष्य को आंतरिक शक्ति प्रदान करती है और उसे शांति, सद्भाव तथा मानवीय मूल्यों के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देती है। आज की शिक्षा और विकास प्रक्रिया में नैतिकता, विवेक, आत्मानुशासन तथा संवेदनशीलता को विशेष स्थान देना आवश्यक है। उन्होंने वडोदरा केंद्रीय जेल में ब्रह्माकुमारीज द्वारा लगभग 30 वर्षों से बंदियों को आध्यात्मिक ज्ञान और सकारात्मक जीवन-दृष्टि प्रदान करने के प्रयासों का भी उल्लेख किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि ग्लोबल स्पिरिचुअल पैलेस ऐसा केंद्र बनेगा, जहां समाज के विभिन्न वर्गों के लोग एक साथ आकर शांति, सद्भाव और आपसी जुड़ाव का अनुभव कर सकेंगे। राष्ट्रपति ने भारत की महान आध्यात्मिक विरासत–योग, ध्यान, अहिंसा, करुणा और 'वसुधैव कुटुम्बकम्'–का उल्लेख करते हुए कहा कि आधुनिक विज्ञान, तकनीक और नई सोच के साथ इन मूल्यों का समन्वय भारत को आर्थिक रुप से समृद्ध, वैज्ञानिक रुप से उन्नत, सामाजिक रुप से समावेशी और आध्यात्मिक रुप से जागृत राष्ट्र बनाने में सहायक हो सकता है। उन्होंने युवाओं में आत्मविश्वास, आत्मानुशासन, सकारात्मक सोच, संवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों के विकास पर बल दिया। आंतरिक शक्ति का जागरण केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का भी महत्वपूर्ण आधार है।

राष्ट्रपति ने कुछ देर तक मेडिटेशन रूम में लगाया ध्यान

समारोह में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा एवं प्रोटोकॉल मंत्री प्रफुल पंसेरिया, गुजरात जोन प्रभारी राजयोगिनी बीके भारती दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके उषा दीदी तथा अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। राष्ट्रपति ने परिसर में रुद्राक्ष का पौधा रोपकर प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया। इसके बाद राजयोगिनी बीके डॉ. निरंजना दीदी एवं अन्य वरिष्ठ बहनों की उपस्थिति में उद्घाटन पट्टिका का अनावरण कर रिट्रीट सेंटर का विधिवत उद्घाटन किया। उन्होंने बाबा के कमरे में जाकर ध्यान कक्ष में कुछ समय राजयोग मेडिटेशन भी किया। राजयोगिनी बीके डॉ. निरंजना दीदी ने स्वागत उद्बोधन में ग्लोबल स्पिरिचुअल पैलेस को राजयोग, आध्यात्मिक जागृति, मूल्यनिष्ठ जीवन, शांति और विश्व नवनिर्माण का केंद्र बताया। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके उषा दीदी ने कहा कि व्यक्ति के आंतरिक परिवर्तन से ही परिवार, समाज और विश्व में सकारात्मक बदलाव का मार्ग प्रशस्त होता है।

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि शिक्षा, विज्ञान और तकनीक में प्रगति के साथ मानवीय मूल्यों, आत्मसंयम, विवेक और आध्यात्मिक चेतना का विकास आवश्यक है। समारोह में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। बीके डॉ. निरंजना दीदी ने राष्ट्रपति को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, चिकित्सकों, न्यायाधीशों, अभियंताओं, शिक्षाविद और बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया। ग्लोबल स्पिरिचुअल पैलेस राजयोग, आध्यात्मिक जागृति, शांति, सद्भाव और मूल्यनिष्ठ जीवन के प्रसार के माध्यम से विश्व नवनिर्माण के संदेश को आगे बढ़ाने का संकल्प लेकर स्थापित हुआ है।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा ग्रामीण विकास एवं प्रभावी नेतृत्व पर प्रशिक्षण-सह-सेमिनार आयोजित

हैदराबाद में 500 सरपंच ने सीखी यौगिक खेती की विधि

शिव आमंत्रण, हैदराबाद।

ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा 6 सितंबर 2026 को शांतिसरोवर स्थित ग्लोबल पीस ऑडिटोरियम, एकेडमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड में 'प्रभावी नेतृत्व के माध्यम से ग्रामीण विकास' विषय पर 500 सरपंचों के लिए प्रशिक्षण-सह-सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें ग्रामीण विकास, राजयोग मेडिटेशन, आंतरिक नेतृत्व, तनाव प्रबंधन, सुशासन एवं ग्राम विकास के सफल अनुभवों पर विभिन्न सत्र आयोजित किए गए।

तेलंगाना की माननीय मंत्री डॉ. अनसूया सीतक्का ने कहा कि गांवों का तीव्र विकास स्थानीय नेतृत्व, जनभागीदारी और सरकार के साथ समन्वय से संभव है। उन्होंने सरपंचों को मेडिटेशन के माध्यम से तनाव कम करने और आंतरिक शांति प्राप्त करने का संदेश दिया।

ब्रह्माकुमारीज़ सेंट पीटर्सबर्ग, रूस की निदेशक राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने कहा कि प्रभावी नेतृत्व की शुरुआत आत्म-परिवर्तन से होती है और सकारात्मक नेतृत्व समाज में स्थायी परिवर्तन ला सकता है।



शांतिसरोवर, हैदराबाद की निदेशक राजयोगिनी बीके कुलदीप दीदी ने सरपंचों को आंतरिक शक्ति, शांति और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ गांवों की सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

माउंट आबू से कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के मुख्यालय समन्वयक बीके सुमंत ने शाश्वत यौगिक कृषि एवं मल्टीलेयर फार्मिंग मॉडल के माध्यम से किसानों की समृद्धि और ग्रामीण विकास की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। तेलंगाना के पंचायत राज एवं ग्रामीण विकास विभाग की कमिश्नर श्रीमती डी. दिव्या, आईएएस ने ग्रामीण विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में सरपंचों की भूमिका, जनभागीदारी और जवाबदेही के महत्व को रेखांकित किया।

बीके अरुंधति, तेलंगाना कोऑर्डिनेटर, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग ने 'लीडिंग फ्रॉम विदिन' विषय पर प्रशिक्षण देते हुए आत्म-जागरूकता, सकारात्मक सोच और आंतरिक शक्तियों के विकास को प्रभावी नेतृत्व का आधार बताया। राजस्थान के जहोटा गांव के सरपंच श्याम प्रताप सिंह ने अपने गांव के विकास के अनुभव साझा करते हुए जनसहयोग, दृढ़ इच्छाशक्ति और प्रभावी नेतृत्व की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में जोर दिया गया कि सरपंच केवल प्रशासनिक जिम्मेदारियां निभाने वाले जनप्रतिनिधि ही नहीं, बल्कि गांवों में सकारात्मक बदलाव लाने वाले नेतृत्वकर्ता भी हैं। 'एक नई शुरुआत की ओर' संदेश के साथ आयोजित इस प्रशिक्षण-सह-सेमिनार ने प्रतिभागियों को आत्म-विकास, जनसेवा और गांवों के समग्र एवं सतत विकास के लिए प्रेरित किया।

तनाव प्रबंधन के उपाय बताए

बीके श्रीलता ने 'स्ट्रेस बस्टर्स' सत्र में तनाव प्रबंधन के व्यावहारिक उपाय बताए, जबकि बीके मनीषा ने राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से आत्मिक शक्ति, एकाग्रता, शांति और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव कराया। बीके विष्णुप्रिया ने ग्रामीण विकास, एकता और सकारात्मक परिवर्तन का संदेश दिया।

पूर्व महासचिव बृजमोहन भाई की प्रथम पुण्यतिथि सद्भावना दिवस के रूप में मनाई

मजहब की दीवारें तोड़ने से ही आएगी एकता: महामंडलेश्वर



शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज संस्थान के पूर्व महासचिव एवं संस्थान के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अंग-संग रहे बृजमोहन भाई की प्रथम पुण्यतिथि सद्भावना दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर शांतिवन स्थित डायमंड हॉल में 'सबका मालिक एक' विषय पर इंटरफेथ सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में दिव्य शक्ति अखाड़ा, सहारनपुर से आए महामंडलेश्वर कमल किशोर महाराज ने कहा कि मजहब इंसानों ने बनाए हैं, जबकि परमात्मा ने एक परिवार बनाया था। जब तक हम मजहब की दीवारों को नहीं तोड़ेंगे, तब तक श्रेष्ठ भारत का निर्माण संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान परमात्मा शिव के सान्निध्य में 'एक विश्व, एक परिवार' के सिद्धांत को लेकर पूरे विश्व में कार्य कर रहा है। यही कारण है कि 140 देशों में सेवाएं देने के बावजूद संस्थान में किसी प्रकार का मतभेद नहीं है। सभी धर्मों के लोग एक मंच पर आकर एक परमात्मा और विश्व परिवार की भावना का सम्मान करते हैं।

इन्होंने भी विचार रखे-

इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी एवं राजयोगिनी जयन्ती दीदी, महासचिव राजयोगी करुणा भाई, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. मृत्युंजय भाई, दिल्ली पांडव भवन सबजोन की प्रभारी बीके पुष्पा दीदी, दिल्ली सबजोन की बीके चक्रधारी दीदी, ओआरसी की सहनिदेशिका बीके गीता दीदी, बीके सपना दीदी सहित अन्य वक्ताओं ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

हमें अपने जीवन में धार्मिक मूल्यों और सद्गुणों को अपनाने की आवश्यकता है





जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के उपाध्यक्ष प्रो. मोहम्मद सलीम तथा भारतीय सर्व धर्म संसद के नेशनल कन्वीनर एवं महर्षि भृगु पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर गोस्वामी सुशील महाराज ने कहा कि मजहबी तनाव धर्म के कारण नहीं, बल्कि धर्म का वास्तविक अर्थ नहीं समझने और उसे जीवन में धारण नहीं करने के कारण उत्पन्न होता है। इसलिए हमें अपने जीवन में धार्मिक मूल्यों और सद्गुणों को अपनाने की आवश्यकता है।

ये भी रहे मौजूद

तिब्बती संसद के पूर्व स्पीकर आचार्य येशी फुंतोश, दिल्ली पारसी अंजुमन के ट्रस्टी मारजबान नरीमन जेवाला, सद्भावना पीस स्टडीज संस्थान के संस्थापक निदेशक डॉ. एमडी थॉमस, डॉ. एके मर्चेंट, सिख विद्वान एवं इंटरफेथ नेता सरदार परमपाल सिंह, पब्लिक अफेयर्स बहाई के निदेशक कारमेल मोघबेलपूर त्रिपाठी, फिरोज बख्त अहमद तथा जूना अखाड़ा, हरिद्वार के महामंडलेश्वर प्रबोधानंद गिरी महाराज सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बृजमोहन भाई के जीवन पर आधारित एक पुस्तक का विमोचन किया गया।

सिंगरौली, मप्र



ब्रह्माकुमारी संस्थान के भोपाल जोन की पूर्व प्रशासिका राजयोगिनी बीके अवधेश दीदी का प्रथम पुण्य स्मृति दिवस और संस्थान के महासचिव राजयोगी निर्वैर भाई का द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस तपोवन कॉम्पलेक्स मनाया गया। इसमें प्रदेश भर से बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमार भाई -बहनों ने भाग लिया। मुख्यालय माउंट आबू से पधारे कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी बीके राजू भाई, राजयोगिनी बीके शैलजा दीदी, नगर निगम के अध्यक्ष देवेश पांडे, अग्रवाल समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश अग्रहरि, तपोवन कॉम्पलेक्स की निदेशिका बीके शोभा दीदी, ग्वालियर स्थित विश्व नव निर्माण रिट्रीट सेंटर की निदेशिका बीके ज्योति दीदी, एनटीपीसी के डीजीएम आशुतोष अरोड़ा, जोधपुर के आनंद रथी ग्रुप के तेज बहादुर माथुर, अहमदाबाद से आई बीके संगीता दीदी, बैतूल की बीके मंजू दीदी, सीधी की बीके रेखा दीदी ने दीदी के साथ के अपने संस्मरण सुनाए।

भोपाल, मप्र



ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल जोन की पूर्व निदेशिका राजयोगिनी बीके अवधेश दीदी का प्रथम पुण्य स्मृति दिवस 19 सितंबर 2026 को राजयोग भवन में वरदानी दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी बीके शारदा दीदी और 'ज्ञानामृत' की संपादिका राजयोगिनी बीके उर्मिला दीदी ने पुष्पांजलि अर्पित कर अवधेश दीदी के साथ बिताए पलों को याद किया और उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। इस दौरान महापौर मालती राय, आईआईएमसी के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, इंदौर से बीके आशीष गुप्ता, पंचमठाधीश रीवा के बाल ब्रह्मचारी विजय शंकर महाराज, बीके निर्मला दीदी, बीके पंचशीला दीदी, बीके रेखा दीदी, बीके दुर्गेश दीदी, बीके नीता दीदी, बीके सुधा दीदी और बीके प्रकाश भाई मुख्य रूप से मौजूद रहे। संचालन बीके डॉ. रीना दीदी ने किया।

लोगों की सेवा करना ही मानवता का मुख्य धर्म होना चाहिए : मोहिनी दीदी



शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ के पूर्व महासचिव राजयोगी बीके निर्वैर भाई की द्वितीय पुण्यतिथि सर्वस्नेही दिवस के रूप में मनाई गई। श्रद्धांजली सभा में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि निर्वैर भाई का जीवन श्रेष्ठ मानवता की मिसाल है। उन्होंने नेवी की नौकरी छोड़कर अपना जीवन संस्थान की सेवाओं के लिए समर्पित कर दिया। उनके सान्निध्य में संस्थान ने अनेक ऊंचाइयों को छुआ। दादी के साथ रहते हुए निर्वैर भाई ने आदर्श जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका संकल्प था कि आसपास के क्षेत्रों में अस्पतालों का निर्माण हो, ताकि असहाय और गरीब लोगों की सेवा की जा सके। इसी भावना से उन्होंने ग्लोबल हॉस्पिटल के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे स्थानीय लोगों को उपचार के लिए दूर न जाना पड़े। आज उनका यह संकल्प साकार हो रहा है। महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि निर्वैर भाई में वे सभी विशेषताएं थीं, जो किसी महापुरुष में होनी चाहिए। मानवता की सेवा के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें सदैव याद किया जाएगा।

अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई तथा डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि निर्वैर भाई के मन में सदैव लोगों के कल्याण की भावना रहती थी। उनके पास जो भी व्यक्ति आया, वह कभी खाली हाथ नहीं लौटा। उनके आचरण और कार्यशैली से लाखों लोगों को श्रेष्ठ मानव बनने की प्रेरणा मिली।

समाजसेवा प्रभाग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित, देशभर से समाजसेवियों ने लिया भाग

ब्रह्माकुमारी बहनें बिना किसी लोभ-लालच के लोगों का जीवन बेहतर बनाने का कार्य कर रही हैं : मंत्री

शिव आमंत्रण, आबू रोड।



ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा मानसरोवर में समाज सेवा प्रभाग द्वारा 24 से 27 सितंबर तक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से आए समाजसेवियों ने मानवता की सेवा, नैतिक मूल्यों की स्थापना, राजयोग ध्यान, तनावमुक्त जीवन और सामाजिक सद्भाव जैसे विषयों पर विचार-विमर्श किया।

शुभारंभ पर उत्तराखंड के सूचना प्रौद्योगिकी एवं गुड गवर्नेंस मंत्री प्रदीप बत्रा ने कहा कि लोगों की दिल से सेवा करना ही सच्ची सेवा है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान निःस्वार्थ सेवा का महत्व समझा रहा है। संस्थान की बहनें बिना किसी लोभ-लालच के विश्वभर में लोगों की सेवा कर उनके जीवन को बेहतर बनाने का कार्य कर रही हैं। वर्तमान समय में सभी को सेवा कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए, क्योंकि सेवा करना सबसे बड़ा पुण्य है।

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने कहा कि आत्मकल्याण के साथ दूसरों के जीवन को श्रेष्ठ बनाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। नैतिक मूल्यों का पतन अनेक सामाजिक समस्याओं का प्रमुख कारण है। लोगों की आर्थिक सहायता करें या न करें, लेकिन उनके जीवन में श्रेष्ठ संस्कारों का विकास करना समय की मांग है।

महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि मानवता की सेवा ही सर्वोत्तम सेवा है। संस्थान के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया। लाखों भाई-बहन विश्व के 140 देशों में लोगों की सेवा कर नए समाज की स्थापना में योगदान दे रहे हैं।

नलवा, हिसार के विधायक रणधीर पानीहार ने कहा कि समाज सेवा ही मानव सेवा है। प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की मदद करनी चाहिए। प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके प्रेम भाई, राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई तथा मुख्यालय संयोजक बीके वीरेंद्र भाई ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी से मानवता की सेवा में जुटने का आह्वान किया। गुलबर्गा की बीके शिवलीला, चंडीगढ़ की बीके पूनम तथा दिल्ली खानपुर की बीके आशा बहन सहित अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। संचालन डूंगरपुर की बीके विजयलक्ष्मी ने किया। समाजसेवियों का पट्टा पहनाकर स्वागत किया गया।

मोटिवेशनल स्पीकर ईवी गिरीश ने कहा कि अपनी चेतना को जागृत करना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। जब व्यक्ति की चेतना जागृत होती है, तो उसके लिए बुरे संस्कारों पर विजय प्राप्त करना सहज हो जाता है। इस दौरान सांस्कृतिक संध्या के साथ तनावमुक्त जीवन, जीवन प्रबंधन, राजयोग ध्यान तथा जीवन में आने वाली समस्याओं के कारणों और उनके समाधान पर भी चर्चा की गई।



सम्मेलन में मुंबई, दिल्ली तथा देश के अन्य स्थानों से आए कलाकारों ने राजयोग ध्यान और आध्यात्मिकता को बढ़ावा देने वाली प्रेरणादायी प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया।

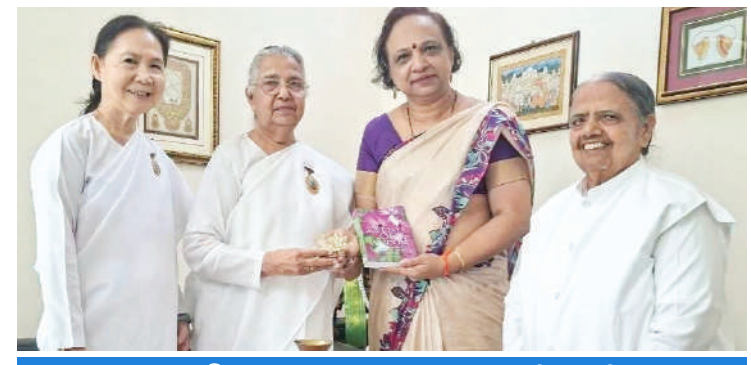
राज्यस्तरीय वार्षिक आध्यात्मिक सम्मेलन एवं 'नशामुक्त हिमाचल अभियान' का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, सुन्नी, हिमाचल प्रदेश।



ब्रह्माकुमारीज़ परिसर ओम शांति भवन, सुन्नी में राज्यस्तरीय वार्षिक आध्यात्मिक सम्मेलन एवं 'नशामुक्त हिमाचल अभियान' का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एसडीएम राजेश वर्मा, विशिष्ट अतिथि ब्रह्माकुमारी मनोरमा बहन, वरिष्ठ राजयोगी प्रकाश, पूर्व सांसद सुरेश चंदेल सहित लगभग 450 श्रद्धालु उपस्थित रहे।

शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। वक्ताओं ने राजयोग मेडिटेशन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए नशे जैसी बुराइयों से दूर रहने, भय पर विजय पाने तथा देह-अभिमान का त्याग कर आध्यात्मिक जीवन अपनाने की प्रेरणा दी।इस अवसर पर एसडीएम राजेश वर्मा ने शकुंतला बहन को अभियान का ध्वज सौंपा। कार्यक्रम के माध्यम से नशामुक्त समाज के निर्माण तथा आध्यात्मिक जागरूकता बढ़ाने का संदेश दिया गया।



मलेशिया में राजयोग पर हुई चर्चा

मलेशिया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) में एक सार्थक बैठक आयोजित हुई, जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग मेडिटेशन, शांति एवं सद्भाव जैसे विषयों पर विचार साझा किए गए। ब्रह्माकुमारीज़ की वरिष्ठ आध्यात्मिक बहन ने राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से आंतरिक शांति और सकारात्मक जीवन-मूल्यों के महत्व को स्पष्ट किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों के लिए संक्षिप्त ध्यान सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने आंतरिक शांति का अनुभव किया। बैठक में भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं पर भी सार्थक चर्चा हुई।



नई दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज से ज्ञान चर्चा

नई दिल्ली, लोधी रोड। नई दिल्ली संसदीय क्षेत्र की सांसद बांसुरी स्वराज से ज्ञान चर्चा के उपरांत ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से बीके गिरिजा दीदी और बीके पीयूष भाई ने उन्हें शिव परमात्मा का चित्र भेंट किया। इस अवसर पर आध्यात्मिक ज्ञान एवं जीवन मूल्यों से जुड़े विषयों पर चर्चा हुई।

ओआरसी में 'स्पिरिचुअल इन्वेस्टमेंट प्रोग्राम' आयोजित

आंतरिक शक्ति ही सबसे बड़ा संबल : आशा दीदी

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर (ओआरसी) में वित्त विशेषज्ञों के लिए दो दिवसीय 'स्पिरिचुअल इन्वेस्टमेंट प्रोग्राम' आयोजित किया गया। फाइनेंस फ्रेटरनिटी सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में देशभर से 100 से अधिक वरिष्ठ वित्त विशेषज्ञों ने भाग लिया।

इसमें ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि तेजी से बदलते और अनिश्चित समय में स्वयं को मानसिक रूप से मजबूत बनाना आवश्यक है। मनुष्य की ऊर्जा का बड़ा हिस्सा व्यर्थ विचारों में नष्ट हो जाता है। इन विचारों पर नियंत्रण पाने और आंतरिक शक्ति बढ़ाने के लिए आध्यात्मिक जीवनशैली अपनाना जरूरी है। फाइनेंस फ्रेटरनिटी सेवा प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी बीके ललित ने कहा कि धन अर्जित करने के साथ आंतरिक शक्तियों और जीवन मूल्यों को समृद्ध करना भी महत्वपूर्ण है। भौतिक संपत्ति यहीं रह जाती है, जबकि आत्मा द्वारा अर्जित श्रेष्ठ संस्कार और मूल्य जीवन की वास्तविक पूंजी हैं। भारत सरकार के गृह मंत्रालय में प्रधान मुख्य लेखा नियंत्रक डॉ. अजय शंकर सिंह ने कहा कि आधुनिक समाज में अध्यात्म की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है। ब्रह्माकुमारीज़ भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। आईसीएआई के पूर्व अध्यक्ष सीए अतुल गुप्ता ने कहा कि दूसरों की प्रगति में प्रसन्न होना और समस्त समाज को एक परिवार के रूप में अनुभव करना ही सच्चे अध्यात्म का सार है।



इंदौर से बिलासपुर आध्यात्मिक जन जागृति अभियान का समापन



शिव आमंत्रम, भोपाल/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक एवं समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित इंदौर से बिलासपुर आध्यात्मिक जन जागृति अभियान के भोपाल पहुंचने पर क्षेत्रीय मुख्यालय राजयोग भवन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान आध्यात्मिक जन जागृति शोभायात्रा भी निकाली गई। कार्यक्रम में ब्लेसिंग हाउस की निदेशिका बीके डॉ. रीना दीदी ने अभियान का उद्देश्य बताया। मध्य प्रदेश के राज्य निर्वाचन आयुक्त मनोज कुमार श्रीवास्तव, आईएएस ने अभियान की सराहना करते हुए वेदों एवं शास्त्रों के उदाहरणों से प्रशासन और समाज में आध्यात्मिक मूल्यों के महत्व को स्पष्ट किया। मध्य प्रदेश मानव अधिकार आयोग अध्यक्ष डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़ के अध्यक्ष गोविंद गोयल, राजयोगिनी बीके निर्मला दीदी, अभियान के संयोजक बीके राकेश भाई ने प्रशासन एवं समाज सेवा अभियान के उद्देश्यों और गतिविधियों पर प्रकाश डाला।



शिव आमंत्रम, बिलासपुर। ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग भवन में प्रशासनिक प्रभाग एवं समाज सेवा प्रभाग के संयुक्त तत्वावधान में "श्रेष्ठ समाज की स्थापना में आध्यात्मिकता का महत्व" अभियान का समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जबलपुर उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति बी.डी. राठी ने की। मुख्य अतिथि बिलासपुर कलेक्टर संजय अग्रवाल तथा विशिष्ट अतिथि समाजसेवी एवं उद्योगपति प्रवीण झा रहे। कार्यक्रम से पूर्व जनजागरण रैली निकाली गई। राजयोग भवन की सेवाकेंद्र संचालिका बीके स्वाति दीदी ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. कमल छाबड़ा ने आभार व्यक्त संचालन बीके संतोषी दीदी ने किया। अभियान के संयोजक बीके राकेश भाई ने अभियान के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सेवाओं के बारे में बताया।

सुरक्षा प्रहरियों के लिए एसईसीएल में 30 दिनी राजयोग ध्यान प्रशिक्षण आयोजित



शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग।

एसईसीएल में नवचयनित सुरक्षा प्रहरियों के लिए 30 दिवसीय राजयोग मेडिटेशन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने नवचयनित सुरक्षा प्रहरियों को प्रतिदिन राजयोग मेडिटेशन करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार मोबाइल को नियमित चार्ज करना जरूरी है, उसी प्रकार स्वयं को तनावमुक्त और शक्तिशाली बनाए रखने के लिए मेडिटेशन आवश्यक है। प्रतिदिन 10 से 15 मिनट राजयोग मेडिटेशन करने से मानसिक शांति, एकाग्रता और आंतरिक शक्ति बढ़ती है। बीके गायत्री दीदी ने भी राजयोग मेडिटेशन, सकारात्मक चिंतन, कर्म सिद्धांत, प्राणायाम, योग निद्रा और अष्टशक्तियों सहित विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन किया। मंजू दीदी ने प्रशिक्षुओं को अनुशासित जीवन जीने और सभी के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार रखने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कार्यक्रम के लिए एसईसीएल के सीएमडी हरीश दुहन, मुख्य सुरक्षा अधिकारी दक्षिणामूर्ति मूर्ति, सहायक सुरक्षा उपनिरीक्षक कुमार सिंह और प्रधान सुरक्षा प्रहरी रवि मिश्रा के प्रति आभार व्यक्त किया। अंत में प्रशिक्षुओं को ईश्वरीय वरदान कार्ड प्रदान किए गए।

राजकोट में 'माइंड मनी मैनेजमेंट' सेमिनार आयोजित

एकाउंट प्रोफेशनल्स को मन प्रबंधन के बताए सूत्र



शिव आमंत्रण, राजकोट, गुजरात। हैप्पी विलेज रिट्रीट सेंटर में ब्रह्माकुमारीज़ के फाइनेंस फ्रेटर्निटी सेवा विंग द्वारा बैंक मैनेजर, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, कंपनी सेक्रेटरीज एवं वित्तीय क्षेत्र से जुड़े प्रोफेशनल्स के लिए 'माइंड मनी मैनेजमेंट' विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें वित्तीय प्रबंधन के साथ मन के प्रबंधन, सकारात्मक सोच और आध्यात्मिक मूल्यों के महत्व पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में गुजरात ज़ोन की निदेशिका बीके भारती दीदी, माउंट आबू से फाइनेंस फ्रेटर्निटी सेवा विंग के वाइस चेयरमैन बीके सीए ललितभाई, एलआईसी के एसडीएम डिवीजन हेड डॉ. एम.के. दवे, माही मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के सीईओ आलोक कुमार गुप्ता, आरडीसी बैंक के सीईओ सखिया साहब, आईसीएआई के चेयरमैन सीए धवल दोशी तथा नथानी ब्लड बैंक के संचालक नथानी साहब सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं स्वागत नृत्य के साथ हुआ।

मुख्य वक्ता बीके सीए ललितभाई ने 'कार्मिक अकाउंट फिलॉसफी' पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी प्रत्येक सोच और कर्म का भी डेबिट-क्रेडिट होता है। इसलिए स्थूल धन के साथ दुआओं का धन भी अवश्य कमाएं। उन्होंने वित्तीय वर्ष में 31 मार्च की क्लोजिंग और 1 अप्रैल की नई ओपनिंग का उदाहरण देते हुए जीवन की कर्मों की बैलेंस शीट को मजबूत बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि बाहरी परिस्थितियों पर आधारित खुशी स्थायी नहीं होती। सच्ची खुशी अंतर्मन की यात्रा और परमात्मा की स्मृति से प्राप्त होती है।

डॉ. एम.के. दवे ने ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क से अनुभव होने वाली सकारात्मक ऊर्जा की सराहना की। आरडीसी बैंक के सीईओ सखिया साहब ने कहा कि यह सेमिनार व्यावसायिक विषयों के साथ आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करने वाला रहा। सेमिनार में लगभग 200 लोगों ने सहभागिता की। बीके तनीषा बहन ने मधुर गीत प्रस्तुत किया।

गीता का सार, श्रेष्ठ जीवन का आधार कार्यक्रम आयोजित



शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र।

न्यू पलासिया स्थित ज्ञानशिखर ओम शांति भवन में आयोजित 'गीता का सार, श्रेष्ठ जीवन का आधार' गीता ज्ञान रहस्य कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के इस्कॉन प्रमुख स्वामी महामनदास, हुबली (कर्नाटक) से पधारीं सुप्रसिद्ध गीता ज्ञान विशेषज्ञ एवं ब्रह्माकुमारी वीणा दीदी, ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी, महामंडलेश्वर सीमानंद गिरी (छोटू महाराज), मोयरा ग्रुप के वाइस प्रेसिडेंट एवं समाजसेवी पवन सिंघानिया, बैंक ऑफ इंडिया के मुख्य प्रबंधक समीर मांडेकर तथा नई दुनिया समाचार पत्र के स्टेट एडिटर सदुरु शरण अवस्थी उपस्थित रहे। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी उषा बहन, अनीता बहन सहित अन्य गणमान्यजन भी मौजूद रहे।



गंज बासौदा में 'संवाद से संकल्प' नशामुक्त बासौदा कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, गंज बासोदा, मप्र। 'संवाद से संकल्प'त नशामुक्त बासौदा कार्यक्रम में पुलिस महानिरीक्षक, भोपाल देहात जोन रुचिवर्धन मिश्र, उप पुलिस महानिरीक्षक, भोपाल देहात रेंज राजेश सिंह चंदेल तथा पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी का ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से ईश्वरीय स्वागत किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी रेखा दीदी एवं बीके रुक्मणी दीदी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का उद्देश्य नशामुक्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा समाज को नशामुक्त बनाने के लिए संकल्पित करना रहा।

संपादकीय

बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण ही उज्ज्वल भविष्य की नींव

बाल दिवस केवल बच्चों की मुस्कान, खुशियों और उत्सव का दिन नहीं, बल्कि यह आत्मचिंतन का अवसर भी है कि हम आने वाली पीढ़ी को कैसा भविष्य सौंप रहे हैं। बच्चे किसी भी राष्ट्र की वास्तविक पूंजी हैं। उनके कोमल मन में आज जो विचार, मूल्य और संस्कार बोए जाएंगे, वही कल समाज की दिशा और राष्ट्र का चरित्र निर्धारित करेंगे। इसलिए बच्चों को केवल शिक्षित करना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उन्हें संस्कारवान, आत्मविश्वासी, संवेदनशील और चरित्रवान बनाना भी उतना ही आवश्यक है। प्रत्येक बच्चा एक पवित्र आत्मा है, जिसमें शांति, प्रेम, आनंद, पवित्रता और शक्ति जैसे मूल गुण स्वाभाविक रूप से विद्यमान हैं। आवश्यकता इन गुणों को बाहरी प्रतिस्पर्धा और नकारात्मक वातावरण के बीच सुरक्षित रखते हुए विकसित करने की है। जब बच्चे को उसकी आत्मिक पहचान का बोध कराया जाता है, तब उसमें आत्मसम्मान बढ़ता है और वह दूसरों के प्रति भी सम्मानपूर्ण व्यवहार करना सीखता है। आज का बचपन मोबाइल, इंटरनेट, प्रतियोगिता और अपेक्षाओं के दबाव से घिरा हुआ है। अच्छे अंक लाने, आगे बढ़ने और दूसरों से बेहतर बनने की दौड़ में कई बार बच्चों की सहजता, रचनात्मकता और भावनात्मक आवश्यकताएं पीछे छूट जाती हैं। ऐसे समय में उन्हें केवल सफल होने की शिक्षा नहीं, बल्कि शांत रहने, सही निर्णय लेने, असफलताओं से सीखने और परिस्थितियों में संतुलित रहने की कला भी सिखानी होगी। राजयोग ध्यान बच्चों को अपने विचारों को समझने, मन को एकाग्र करने और भावनाओं को संतुलित करने की दिशा में प्रेरित कर सकता है। जब बच्चा कुछ क्षण शांत रहकर अपने भीतर झांकना सीखता है, तब उसमें धैर्य, आत्मनियंत्रण और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता मिलती है। आध्यात्मिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों पर उपदेश थोपना नहीं, बल्कि उन्हें अपने श्रेष्ठ गुणों को पहचानने और जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित करना है। बच्चों के संस्कार निर्माण में परिवार और विद्यालय की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

बोध कथा/जीवन की सीख

संस्कारों का बीज

एक दिन एक शिक्षक ने अपने विद्यार्थियों को मिट्टी के छोटे-छोटे गमले दिए और प्रत्येक को एक बीज बोने के लिए कहा। उन्होंने बच्चों से कहा, "इस पौधे की देखभाल करना और कुछ दिनों बाद बताना कि यह कितना बड़ा हुआ।" सभी बच्चों ने नियमित रूप से पौधों को पानी दिया। कुछ दिनों बाद उनके गमलों में नन्हे-नन्हे पौधे निकल आए। लेकिन एक बच्चा ऐसा था, जिसके गमले में कोई अंकुर नहीं फूटा। वह उदास होकर शिक्षक के पास पहुंचा और बोला, "गुरुजी, मैंने पूरी मेहनत की, फिर भी मेरा पौधा नहीं उगा।" शिक्षक ने उसके सिर पर स्नेह से हाथ रखा और कहा, "बेटा, तुमने अपनी ओर से पूरी ईमानदारी से प्रयास किया, यही सबसे बड़ी बात है।"



फिर शिक्षक ने सभी बच्चों को बताया कि उन्होंने जो बीज दिए थे, वे उबाले हुए थे और उनसे पौधा उगना संभव नहीं था। यह परीक्षा पौधों की नहीं, बल्कि बच्चों की ईमानदारी की थी। जिस बच्चे ने पौधा न उगने पर भी सच्चाई स्वीकार की, वही वास्तव में सफल हुआ। शिक्षक ने समझाया, "बच्चों, जीवन में अच्छे अंक और बड़ी उपलब्धियां महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं सत्य, ईमानदारी और श्रेष्ठ संस्कार। प्रतिभा तुम्हें आगे बढ़ा सकती है, लेकिन संस्कार तुम्हें सही दिशा देते हैं।"

शिक्षक ने आगे कहा, "बच्चों, संस्कार भी बीज की तरह होते हैं। यदि हम प्रतिदिन अपने मन में प्रेम, सत्यता, धैर्य और सहयोग के बीज बोएंगे, तो हमारा व्यक्तित्व सुंदर बनता जाएगा। यदि मन में ईर्ष्या, क्रोध और झूठ को स्थान देंगे, तो हमारे व्यवहार में भी वही दिखाई देगा। इसलिए सुबह उठकर स्वयं से संकल्प करो कि आज मैं किसी को दुख नहीं दूंगा, सबके प्रति शुभभावना रखूंगा और हर परिस्थिति में सत्य का साथ दूंगा।"

बच्चों ने उत्सुकता से पूछा, "गुरुजी, हम अपने संस्कारों को श्रेष्ठ कैसे बना सकते हैं?" शिक्षक ने उत्तर दिया, "इसके लिए सबसे पहले अपने विचारों पर ध्यान देना सीखो। कोई तुम्हारे साथ गलत व्यवहार करे, तब भी तुम अपने मन की शांति बनाए रखने का प्रयास करो। गलती हो जाए तो उसे स्वीकार करो, किसी को दुख पहुंचे तो क्षमा मांगो और किसी को सहायता की आवश्यकता हो तो आगे बढ़कर सहयोग करो। यही श्रेष्ठ संस्कारों की सच्ची पहचान है।"

संदेश : बच्चों को केवल सफल बनाना ही पर्याप्त नहीं, उन्हें सच्चा, संवेदनशील और संस्कारवान बनाना भी जरूरी है। उपलब्धियां जीवन को ऊंचाई देती हैं, लेकिन श्रेष्ठ संस्कार जीवन को महानता प्रदान करते हैं। बचपन में बोया गया संस्कारों का बीज ही भविष्य में एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व और सुंदर समाज का आधार बनता है।



मेरी कलम से

ब्रह्माकुमारी मंजू बहन, लुधियाना, पंजाब

संयम पथ पर परमात्म लगन को देख पिताजी भी बन गए सहयोगी

युवा सद्कार्यों में लगाएं अपना जीवन, नशे से रहें दूर

शिव आमंत्रण, आबू रोड। परिवार में बचपन से ही आध्यात्मिक माहौल मिला, क्योंकि लौकिक माताजी रोजाना ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र जाती थीं। वहां जाने से उनके जीवन में काफी परिवर्तन आया। साथ ही बह संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू से प्रकाशित ज्ञानामृत पत्रिका लेकर आती थीं, जिसमें प्रकाशित लेखों को पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली। एक बार पत्रिका में ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) और राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी की फोटो देखकर मुझे ऐसे लगा कि जैसे मैंने इन्हें पहले कभी देखा है। इसके बाद मुझे सेवाकेंद्र पर जाने की प्रेरणा मिली।

जब भी सेवाकेंद्र पर जाना होता था तो ब्रह्माकुमारी दीदियों को सफेद ड्रेस में देखकर मुझे भी ऐसा बनने की प्रेरणा मिलती। इस पर मैंने संकल्प किया कि मुझे भी सफेद वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारी बनना है। जब मैं सेवाकेंद्र पर गई तो राज दीदी जी मुझे बालकी कहकर बुलाते थे। बड़ी दीदियों का बहुत ही प्यार-स्नेह, दुलार मिला।

आज मैं स्वयं को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे परमात्म के इस नई दुनिया की स्थापना, विश्व शांति, स्वर्णिम दुनिया के कार्य में अपना जीवन समर्पित करने का परम सौभाग्य मिला है। मेरा बचपन से ही एक संस्कार है कि हर कार्य मैं एक्यूरेसी के साथ करती हूं। इस कारण से सदा दीदियों के स्नेह का पात्र रहीं। जो भी सेवा रहती है तो पूरे समर्पण भाव के साथ आनंद के साथ पूरा करती हूं। हर कार्य में परफेक्शन पसंद है।

मैंने ब्रह्माकुमारी बहनें के लिए बहुत संघर्ष किया, क्योंकि मेरी माताजी का तो पूरा सपोर्ट था लेकिन मेरे पिताजी ब्रह्माकुमारी में जाने का विरोध करते थे। इस कारण कई बार पिताजी की मार भी खानी पड़ी। लेकिन मेरा परमात्मा के प्रति सच्चा समर्पण, अटूट विश्वास, सेवा और योग के प्रति लगन को देखकर बाद में वह भी नरम पड़ गए और राजी हो गए।

मेरा अनुभव है कि जब जीवन में हम कोई बड़ा संकल्प करते हैं तो परीक्षाएं आना स्वाभाविक है। उन परीक्षाओं के बीच खुद को अडिग रखना और अपने लक्ष्य पर फोकस करना जरूरी है। राजयोग मेडिटेशन हमारे व्यक्तित्व को निखार देता है। इससे हमारी सोच विशाल हो जाती है, पॉजीटिव हो जाती है। मेरा युवाओं से यही आह्वान है कि यह अमूल्य जीवन मिला है तो इसे सद् कार्यों में लगाएं। नशे से दूर रहें।

पवित्र स्वरूप की वास्तविक मनोवृत्ति से राजयोग- मौन



जीवन का मनोविज्ञान **भाग - 100**

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबूरोड। आत्मगत स्मृति का निश्चय और नशा चेतना की उर्ध्वगामी स्थिति का परिणाम है जिसका अनुभव बालक सो मालिक के द्वारा स्पष्ट हो जाता है, जो परमात्मा से विश्व राज्यधिकारी की प्राप्ति का मूलाधार बनकर, आत्मिक अवस्था से आत्मा के अनंत गुणों एवं शक्तियों की सदा पवित्र स्वरूप में स्थायित्व प्रदान करने का अनवरत – पुरुषार्थ , गतिशील बना रहता है।

धर्मगत, धारणात्मक स्वरूप द्वारा आत्मगत पवित्रता: आत्मगत चिंतन की गतिशीलता का व्यापकता से सम्बद्ध परिदृश्य धारणात्मक उच्चता को व्यावहारिक स्थितियों के अन्तर्गत रूपान्तरित करके जीवन में पुष्पित एवं पल्लवित अवस्था का निर्माण कर देता है जिससे सम्पूर्ण मानवता सुगन्धित होकर आत्मिक चित्त और चरित्र का यशगान करने लगती है। उपराम स्थितियों की ओर बढ़ते कदम स्वयं को सम्पन्नता की दिशा में अग्रसर करते हुए कर्मातीत अवस्था की स्थापना में मददगार बन जाते हैं तथा आध्यात्मिक पुरुषार्थ की शक्ति चेतना को अव्यक्त स्वरूप में परिवर्तित करके निरसंकल्प और निर्विकल्प के आभामण्डल में स्थानांतरित कर देती है। धर्मगत धारणा का श्रेष्ठ, शुभ एवं पवित्र स्वरूप जीवन की उच्चता को साधना की धरोहर से साध्य तक पहुंचाने के लिए सदा ही अभिप्रेरित करता रहता है, जिसमें पथ-प्रदर्शन से प्राप्त दिव्य दृष्टि एवं दृष्टिकोण की जीवंतता सम्पूर्ण समर्पित भाव और विचार से जीवन को समृद्धि प्रदान करते हुए आत्मगत पवित्रता के परिवेश को पूर्णतः व्यावहारिक बना देता है।



जीवन में पवित्र स्वरूप की वास्तविक मनोवृत्ति की धारणात्मक स्थितियों का जीवंत चित्रण राजयोग के द्वारा मौन की गहनतम पृष्ठभूमि में प्रविष्ठ होने के पश्चात् ही सुनिश्चित होता है, जिसके लिए आत्मगत स्वमान, स्वरूप तथा स्वभाव का अनुकरण महत्वपूर्ण जिम्मेदार घटक होते हैं। आत्म दर्शन से अभिभूत अन्तःकरण जीवन के अमूल्य स्वरूप को परमात्म दर्शन की वृहद संकल्पना से सम्बद्ध करके धर्मगत धारणा की सत्यता द्वारा आत्मगत पवित्रता के विहंगम परिदृश्य को चरितार्थ करने के लिए भगीरथ पुरुषार्थ को आत्मसात करने की अनवरत चेष्ठा द्वारा जीवन पर्यन्त गतिशील रहकर स्वयं की जीवंतता के सानिध्य में जीवटता को यथावत बनाये रखता है ।

आध्यात्मिक पुरुषार्थ की उच्चता में नैसर्गिक मनोवृत्ति: मानव जीवन अध्यात्म का समावेश होने से व्यक्तित्व का परिष्कार सुनिश्चित हो जाता है जो जीवात्मा की वास्तविक मनोवृत्ति में आध्यात्मिक पुरुषार्थ के माध्यम से बदलाव का कारक बन जाता है जिसमे आत्मिक परिष्कार हेतु अनवरत रूप से अभ्यास एवं परम सत्ता के प्रति "सम्पूर्ण समर्पण, अर्न्तमन की स्थिति को पूर्णतः परिवर्तित कर देता है। चेतना की चैतन्यता से जुड़ी अति सूक्ष्म स्थितियों को विकसित करने के लिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है जिसमें जीवात्मा, स्वयं की मूलभूत वास्तविक मनोवृत्ति को सात्विक स्वरूप में ढालने के लिए साधना की उच्चता को आत्मसात करती है ताकि आत्मिक जगत का ज्ञान और संज्ञान कुशलता से जीवन में घटित हो सके । अध्यात्म के द्वारा जीवात्मा की उच्चता को बनाए रखने की नैसर्गिक शक्ति निरन्तर रूप से प्राप्त होती है जिसके बल से आत्मा के गुणों की अनुभूतियां व्यक्तिगत जीवन में परिलक्षित होती रहती हैं जो व्यक्ति की वास्तविक मनोवृत्ति को सतोप्रधानता का स्वरूप प्रदान करने में मददगार बन जाती है। जीवात्मा को आध्यात्मिक पुरुषार्थ के द्वारा ही निश्चयात्मक बुद्धिमता का विकास करने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मदद प्राप्त होती है जिससे आत्मा के स्वमान, स्वरूप और स्वभाव की स्वीकारोक्ति सुनिश्चित हो जाती है तथा वास्तविक मनोवृत्ति का पवित्र पक्ष सहज रूप से जीवन में गतिशील होते हुए आत्मगत उच्चता को उपलब्धि स्वरूप में स्थापित कर देता है। सात्विक मनोवृत्ति के प्रति जीवन का स्थायित्व निर्मित हो जाना अध्यात्म से पुरुषार्थ का महानतम परिणाम है जो आत्म तत्व की गुणात्मक अभिवृद्धि का पोषक होता है और परमात्म सत्ता से सर्व सम्बन्धों के निर्वहन का महत्वपूर्ण आधार बनकर आत्मिक गुणों एवं शक्तियों की गहन अनुभूति के मूलभूत स्रोत की भूमिका को भरपूरता की प्रासंगिकता में उजागर करके आत्मगत चैतन्यता को आनंददायी परिणिति में परिवर्तित करके प्रस्तुत करता है ।

परमात्म सम्बन्ध की गहनता में राजयोग मौन: जीवन की सतोप्रधानता का यथार्थ सत्यनिष्ठा से आरम्भ होता है जिसमें स्वयं की साधारण पृष्ठभूमि के सानिध्य में उच्च कोटि चिंतन का चिंतन व्यावहारिक स्तर पर क्रियान्वित और उपयोगी परिवर्तन की परिणिति सहजता से प्रस्फुटित हो जाती है जिसके अन्तर्गत आत्मगत अंतरंगता का हर्षाया हुआ स्वरूप आत्मिक समृद्धि की ओर अग्रसर हो जाने में मददगार सिद्ध होता है।



"ईश्वर एक है, सत्य है, निराकार है और संपूर्ण सृष्टि का रचयिता है"

गुरु नानक देव जी, संस्थापक, सिख धर्म



"सच्चा नेतृत्व और बड़प्पन अहंकार त्यागने तथा विनम्र रहने से आता है।"

गुरु अंगद देव जी, द्वितीय गुरु, सिख धर्म

पूर्णिमा विश्वविद्यालय, ग्राम पंचायत जाहोता और ब्रह्माकुमारीज़ के बीच त्रिपक्षीय समझौता

नई पहलः शिक्षा, आध्यात्मिकता और ग्रामीण विकास के संगम से आएगा सामाजिक बदलाव

युवाओं में चरित्र निर्माण, मूल्य शिक्षा को मिलेगा प्रोत्साहन

शिव आमंत्रण, जयपुर (राजस्थान)।

समाज में वास्तविक परिवर्तन केवल संसाधनों की उपलब्धता से नहीं, बल्कि जागरूक नागरिकों, संवेदनशील युवाओं और मजबूत नैतिक मूल्यों से आता है। जब शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार तक सीमित न रहकर समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण से जुड़ता है, तब विकास की नई संभावनाएं जन्म लेती हैं। इसी सोच को साकार करने की दिशा में पूर्णिमा विश्वविद्यालय, ग्राम पंचायत जाहोता और ब्रह्माकुमारीज़ ने मिलकर एक महत्वपूर्ण पहल की है। तीनों संस्थाओं के बीच सामाजिक सहभागिता, ग्रामीण विकास और मूल्यनिष्ठ शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन (एमओयू) संपन्न हुआ।

पूर्णिमा विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) प्रकोष्ठ की पहल पर हुए इस समझौते का उद्देश्य विद्यार्थियों को समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ना, ग्रामीण क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाना और युवाओं में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना है। विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम का विषय 'परिवर्तन के लिए एकजुटता' रखा गया। इस अवसर पर 'डिजिटल युग में सजग जीवनशैली : आंतरिक स्थिरता, चरित्र और शांतिपूर्ण संस्कृति का निर्माण' विषय पर विशेष सत्र भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर पूर्णिमा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. सुरेश चंद्र पाधी, ब्रह्माकुमारीज़ जयपुर सबजोन की प्रभारी बीके सुषमा दीदी तथा बीके चंद्रकला दीदी विशेष रूप से उपस्थित रहीं।



युवाओं को समाज से जोड़ने की पहल

कार्यक्रम में एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. कुलदीप शर्मा ने समझौते के उद्देश्यों और महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसके माध्यम से विद्यार्थियों को सेवा आधारित गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य युवाओं में नेतृत्व क्षमता, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करना है। ग्रामीण समुदायों के साथ प्रत्यक्ष रुप से कार्य करने से विद्यार्थी समाज की चुनौतियों को समझ सकेंगे और उनके समाधान में अपनी भूमिका निभा सकेंगे।

चरित्र निर्माण से बनेगा बेहतर समाज

बीके सुषमा दीदी ने चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्यों और शांतिपूर्ण जीवनशैली की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति यदि नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना से जुड़ जाए, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन की नई धारा प्रवाहित हो सकती है। विद्यार्थियों को व्यक्तिगत उन्नति के साथ सामाजिक कल्याण और राष्ट्र निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

ग्रामीण विकास के लिए साझा प्रयास

इस समझौते के अंतर्गत तीनों संस्थाएं विद्यार्थियों, ग्राम पंचायत और सामाजिक संगठनों की सहभागिता से ग्रामीण विकास, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जागरूकता, मूल्य शिक्षा और सामुदायिक सेवा से जुड़ी गतिविधियां संचालित करेंगी। इससे विद्यार्थियों को कक्षा में प्राप्त ज्ञान को व्यवहार में उतारने और ग्रामीण समुदायों की जरूरतों को समझने का अवसर मिलेगा।

आज मानसिक संतुलन की जरूरत है

बीके चंद्रकला दीदी ने कहा कि डिजिटल तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इसके साथ मानसिक तनाव, एकाग्रता में कमी और भावनात्मक अस्थिरता जैसी चुनौतियां भी सामने आई हैं। ऐसे समय में आंतरिक स्थिरता, सकारात्मक चिंतन और आत्मानुशासन का महत्व बढ़ जाता है। उन्होंने विद्यार्थियों को राजयोग ध्यान और आध्यात्मिक मूल्यों के माध्यम से संतुलित, उद्देश्यपूर्ण और तनावमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने संदेश दिया कि बाहरी दुनिया में सफलता प्राप्त करने के साथ मन की शांति और विचारों की स्पष्टता बनाए रखना भी आवश्यक है। आत्मचिंतन और नियमित ध्यान व्यक्ति को स्वयं को समझने तथा परिस्थितियों का सकारात्मक ढंग से सामना करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

तिनसुकिया : स्वर्ण जयंती समारोह में केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने लिया भाग



शिव आमंत्रण, तिनसुकिया। ब्रह्माकुमारीज़ के तिनसुकिया उपक्षेत्र के स्वर्ण जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने भाग लिया। समारोह का दीप प्रज्वलन के साथ शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, तिनसुकिया सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके रजनी दीदी, माकुम के विधायक संजय किसान, विधायक पुलक गोहाई, नगर पालिका बोर्ड के अध्यक्ष पुलक चेतिया, बीके सुलोचना दीदी, बीके नाथमल भाई, बीके लता दीदी और चंद बजाज सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बागेश्वर धाम सरकार से की मुलाकात



शिव आमंत्रण, कोलकाता। ब्रह्माकुमारीज़ के न्यू टाउन सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके पद्मा दीदी ने बागेश्वर धाम सरकार पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री से मुलाकात कर संस्था की ओर से देशभर में चलाए जा रहे 10 करोड़ नशामुक्ति प्रतिज्ञा महाअभियान की जानकारी दी। साथ ही ईश्वरीय सौगात, संस्था का साहित्य, प्रसाद और पवित्र रक्षासूत्र भेंट किया। इस दौरान बीके दीपक हरके भी मौजूद रहे।

सम्मान समारोहः अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाया

वरिष्ठों के सम्मान, सुविधा और सुरक्षा का युवा पीढ़ी ने लिया संकल्प

शिव आमंत्रण, नरसिंहपुर, मप्र।

अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस के अवसर पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के दिव्य संस्कार भवन, नरसिंहपुर में वरिष्ठजनों के सम्मान एवं आत्मिक सशक्तिकरण के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शहर के गणमान्य नागरिकों, वरिष्ठजनों और युवाओं सहित लगभग 250 लोगों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने सामूहिक दीप प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर पूर्व मंडी सचिव रामसेवक गुप्ता, गायत्री परिवार के वरिष्ठ सदस्य रामशंकर पटेल, इंद्रभूषण सिंह, सेवानिवृत्त प्रोफेसर चित्रा द्विवेदी, अखिलेश अग्रवाल, कैलाश सोनी, गणेश चतुर्वेदी, एसके चतुर्वेदी, डॉ. अनंत दुबे, पूर्व प्राचार्य सोमराज सिंह धानका, सतीश गुप्ता, आरके नावकर, सुरेश ठाकुर, यूएस उपाध्याय और मुकेश नेमा सहित अनेक गणमान्य नागरिक



उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता बीके कुसुम दीदी ने कहा कि वरिष्ठजन परिवार और समाज की अमूल्य धरोहर हैं। उनके अनुभव, संस्कार और जीवन से मिली सीख नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करते हैं। उनका सम्मान और सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। इस अवसर पर वरिष्ठजनों का तिलक लगाकर, पुष्प एवं सम्मान-पट्टा पहनाकर स्वागत किया गया तथा उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की गई।

बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और लघु नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से वरिष्ठजनों के प्रति प्रेम, सम्मान और सहयोग का संदेश दिया। ब्रह्माकुमारी किरण बहन ने राजयोग अनुभूति कराई, जबकि कुमारी राधा और ब्रह्माकुमारी पलक ने प्रेरणादायक गतिविधियां कराईं। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी अर्पिता बहन ने किया।

समापन पर युवा पीढ़ी ने वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान, सुविधा और सुरक्षा का ध्यान रखने तथा उन्हें कभी उपेक्षित महसूस न होने देने का संकल्प लिया। रोहित वर्मा और अशोक शर्मा ने अतिथियों, वरिष्ठजनों, बच्चों एवं सभी सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम ने संदेश दिया कि वरिष्ठजनों का सम्मान किसी एक दिन तक सीमित नहीं, बल्कि जीवनभर निभाया जाने वाला संस्कार है।

नई चेतना से सशक्त भारत अभियान का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।



ब्रह्माकुमारीज के राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन (आरईआरएफ) के अंतर्गत एजुकेशन विंग की ओर से "नई चेतना से सशक्त भारत" शिक्षा अभियान का भव्य शुभारंभ किया गया। अभियान का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से नई चेतना जागृत करना तथा विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच, नैतिक मूल्यों और जीवनोपयोगी संस्कारों को प्रोत्साहित करना है।

शुभारंभ पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के एजुकेशन ऑफिसर किशोर कुमार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) के सचिव राजवीर, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय के कुलसचिव ताहिर मुस्तफा, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलसचिव मुरली कृष्णा तथा एजुकेशन विंग की वाइस चेयरपर्सन बीके डॉ. शुक्ला सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता बढ़ाने, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा शिक्षा के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के समन्वय की दिशा में अभियान के महत्व को रेखांकित किया गया। "नई चेतना से सशक्त भारत" अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों और शिक्षकों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने तथा समाज के निर्माण में शिक्षा की प्रभावी भूमिका को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाएगा।



शिव आमंत्रण, गाडरवारा, मप्र। ब्रह्माकुमारीज के लक्ष्मी टाउनशिप सेवाकेंद्र में "संगम गौरवपूर्ण वृद्ध अवस्था एवं सम्मानित जीवन" विषय पर वरिष्ठजनों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें भाजपा नेता अनूप जैन, पेंशनर समाज अध्यक्ष महेश नेमा, राम रोटी संस्थान से विशाल सिंह ठाकुर, समाजसेवी श्याम राठी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। ब्रह्माकुमारीज गाडरवारा की प्रभारी बीके उर्मिला दीदी, बीके वंदना दीदी और बीके अंजना दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।



शिव आमंत्रण, डीग (राजस्थान)। डीग के नवनिर्वाचित जिला परिषद सभापति अर्पित गुप्ता का ब्रह्माकुमारीज की ओर से आत्मिक स्मृति का तिलक लगाकर तथा पटका, फूलमाला और पगड़ी पहनाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर बीके प्रवीणा बहन, बीके जागृति बहन, भगवान शरण आडतिया, बीके सुरेश भाई एवं अमरनाथ उपस्थित रहे।

हमारी संस्कृति में है वरिष्ठों का सम्मान, संवेदनशीलता रखना



शिव आमंत्रण, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल

गुंजाबाड़ी स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। इस अवसर पर पूर्व डीएसपी एवं समाजसेवी प्रदीप कुमार भट्टाचार्य ने दीप प्रज्वलित किया। कार्यक्रम में अलीपुरद्वार विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. सुशोभन, पूर्व प्रधानाध्यापक अजीत कुमार नाथ, पूर्व शिक्षिका प्रतिमा कार्जी, भारतीय खाद्य निगम से जुड़े दिलीप बर्मन, एनटीपीसी के पूर्व कर्मचारी एवं समाजसेवी सत्येंद्र चंद्र दास, समाजसेवी दिलीप, शिक्षक एवं समाजसेवी दीप्तिमय, समाजसेवी नान्टू दे सरकार तथा केंद्र प्रभारी बीके शम्पा बहन उपस्थित रहे। वरिष्ठजनों का सम्मान एवं अभिनंदन किया गया। वक्ताओं ने वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव, समाज में उनके योगदान और उनके प्रति सम्मान एवं संवेदनशीलता बनाए रखने के महत्व पर विचार व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज की ओर से राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से शांति, सकारात्मकता और आत्मिक शक्ति बढ़ाने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम प्रेम, सम्मान और आध्यात्मिक उमंग के वातावरण में संपन्न हुआ।



शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र। मध्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि की ओर से गांधी आश्रम में महात्मा गांधी जयंती पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी रीना बहन ने कहा कि गांधी जी का जीवन सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम और सेवा का अनुपम उदाहरण है।



शिव आमंत्रण, फतेहाबाद, हरियाणा। अशोक नगर स्थित ब्रह्माकुमारी के ज्ञान-विज्ञान भवन में माउंट आबू से पधारीं वरिष्ठ राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव से मुक्ति और मानसिक शांति पाने के लिए राजयोग मेडिटेशन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर भी मौजूद रहीं। केंद्र संचालिका बीके सुशीला बहन, मदन भाई ने आभार व्यक्त किया।



शिव आमंत्रण, वडोदरा, गुजरात। मांजलपुर सेवाकेंद्र पर विश्वकर्मा दिवस के उपलक्ष्य में कर्मयोगी विश्वकर्मा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें विधायक सतीशभाई पटेल, दीपकभाई अमीन, बीके धीरज दीदी, बीके काजल बहन, बीके रीटा बहन, कारीगर भाई ने अपने विचार व्यक्त किए।



शिव आमंत्रण, लाहोद, भाटापारा। अहिल्या इंटरनेशनल स्कूल में कर्म एवं आत्मचिंतन विषय पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। सत्र के पश्चात प्राचार्य जीसी दास एवं सभी शिक्षकों के साथ ब्रह्माकुमारी बहनें।

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर वरिष्ठजन का किया सम्मान

समाज की धरोहर हैं वरिष्ठजन: बीके निर्मला दीदी

शिव आमंत्रण, रांची, झारखंड



ब्रह्माकुमारीज के चौधरी बागान, हरमू रोड स्थित सेवाकेंद्र में अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत नशामुक्ति की शपथ ली गई। कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक, व्यावसायिक एवं आध्यात्मिक संगठनों से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों ने नशामुक्त समाज के निर्माण में योगदान देने का संकल्प लिया।

भाटिया समाज के रोशनलाल भाटिया, सेल के सेवानिवृत्त महाप्रबंधक प्रभात सिन्हा, चैंबर ऑफ कॉमर्स के पूर्व अध्यक्ष आनंद जालान, रांची के पूर्व सांसद दीपक प्रसाद, बीके निर्मला, चंपा भाटिया, संत निरंकारी मिशन के संदीप नागपाल, झारखंड अधिवक्ता फेडरेशन की रीना श्रीवास्तव तथा फिक्की झारखंड के कार्यकारी निदेशक मुकेश अग्रवाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम के माध्यम से समाज को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने और स्वस्थ, सकारात्मक एवं नशामुक्त जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया गया। वरिष्ठजनों का सम्मान भी किया गया। संचालिका बीके निर्मला दीदी ने कहा कि वरिष्ठजन समाज की धरोहर हैं।



शिव आमंत्रण, भीमताल। डॉ. आरएस टोलिया उत्तराखंड प्रशासनिक अकादमी, नैनीताल में आयोजित तनाव प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज भीमताल की ओर से राजयोग मेडिटेशन कराया गया। इसके माध्यम से अधिकारियों को तनावमुक्त रहने, मन की एकाग्रता बढ़ाने और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम के पश्चात बीके दीपा बहन ने जॉइंट डायरेक्टर डॉ. महेश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट की। इस अवसर पर बीके पूजा बहन, बीके नीमा बहन तथा अकादमी के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस : बुजुर्गों का किया सम्मान

बच्चों और वरिष्ठजनों के बीच मजबूत रिश्तों से बनेगा संवेदनशील समाजः बीके शैलजा दीदी



शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र। अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर जिला चिकित्सालय परिसर में बच्चों और वरिष्ठजनों के बीच आपसी प्रेम, सम्मान एवं भावनात्मक जुड़ाव बढ़ाने के उद्देश्य से विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। सामाजिक न्याय विभाग के सहयोग से हुए इस आयोजन में वरिष्ठजनों के सम्मान, स्वास्थ्य परीक्षण, मनोरंजक गतिविधियों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी कम करने का संदेश दिया गया।

मुख्य वक्ता राजयोगिनी बीके शैलजा दीदी ने कहा कि परिवार में बच्चों और बुजुर्गों के बीच मजबूत रिश्ते बनाने में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका है। परिवार केवल साथ रहने से नहीं, बल्कि प्रेम, सम्मान, संवाद और भावनात्मक जुड़ाव से मजबूत बनता है। वरिष्ठजन परिवार की धरोहर हैं और उनके अनुभव नई पीढ़ी के लिए अमूल्य मार्गदर्शन हैं। बच्चों को उनके साथ समय बिताने, उनकी बातें सुनने और उनसे सीखने के अवसर देने चाहिए। मुख्य अतिथि विधायक ललिता यादव ने कहा कि वरिष्ठजनों और नाती-पोतों के बीच दूरी कम करने के लिए इस तरह की पहल अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने बुजुर्गों के सम्मान और उनके साथ भावनात्मक जुड़ाव को समाज की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बताया। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से मोबाइल की बढ़ती लत और माता-पिता को वृद्धाश्रम भेजने जैसी सामाजिक समस्याओं पर आधारित भावपूर्ण नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई। शिवांशी, अंजलि, मुस्कान, इच्छा, उर्वशी, तनिष्का और वर्षा ने नाट्य मंचन किया।



शिव आमंत्रण, जम्मू। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के श्री महाराजा रणवीर सिंह परिसर, कोट-भलवाल, जम्मू के वाणी-विलास सभागार में 10 करोड़ नशामुक्ति प्रतिज्ञा महाअभियान" के अंतर्गत नशामुक्ति प्रतिज्ञा सत्र का आयोजन किया गया। इस दौरान बीके रविन्द्र भाई, बीके कुसुम बहन, बीके श्वेता बहन ने अपने विचार व्यक्त किए।



शिव आमंत्रण, भरतपुर (राजस्थान)। भरतपुर की नवनिर्वाचित उपमहापौर अम्बिका सैनी एवं पार्षद किरन देवी सैनी का ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर स्वागत एवं सम्मान किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी कविता दीदी एवं प्रवीणा बहन ने तिलक, पटका, माला और पगड़ी पहनाकर उनका अभिनंदन किया।

उत्सव: मुलुंड सबज़ोन ने मनाया स्थापना दिवस

समारोह में दिखाई मुलुंड सबजोन की सेवा यात्रा

शिव आमंत्रण, मुलुंड, मुंबई। ब्रह्माकुमारीज़ के मुलुंड सबजोन द्वारा 2 अक्टूबर को सबजोन स्थापना दिवस आर. आर. सिंह एजुकेशन ट्रस्ट हॉल, म्हाडा कॉलोनी में मनाया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने अपने आध्यात्मिक अनुभवों एवं ज्ञानपूर्ण विचारों द्वारा सभी को प्रेरित किया। वहीं डॉ. बीके सविता दीदी ने भी अपने प्रेरणादायी संबोधन से ब्राह्मण परिवार को आत्मिक शक्ति, श्रेष्ठ संकल्प एवं सेवा के प्रति जागरूक किया। सम्मान समारोह एवं मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम में आध्यात्मिक मूल्यों, संस्कारों, सेवा एवं ब्राह्मण जीवन की सुंदर झलक देखने को मिली, जिसने पूरे वातावरण को उमंग-उत्साह से भर दिया। यह समारोह केवल मुलुंड सबजोन के एक और वर्ष की यात्रा का उत्सव नहीं था, बल्कि पूरे ब्राह्मण परिवार के लिए एक ताज़गी देने वाला,



ऊर्जा से भरने वाला एवं पुनः प्रेरित करने वाला आध्यात्मिक मिलन रहा। इस अवसर ने आपसी एकता, सहयोग, स्नेह एवं परिवारपन की भावना को और मजबूत किया तथा सभी को अपने स्व-पुरुषार्थ, आत्म-परिवर्तन एवं सेवा में और बेहतर करने की प्रेरणा दी। इस अवसर ने मुलुंड सबजोन की उस सुंदर यात्रा को भी रेखांकित किया, जिसमें आत्माओं को जागृत करना, आध्यात्मिक मूल्यों का संवर्धन करना, राजयोग की रोशनी फैलाना और सामूहिक रूप से सेवा के मार्ग पर आगे बढ़ना निरंतर जारी है।

मुख्यमंत्री का किया सम्मान



शिव आमंत्रण, कुरुक्षेत्र, हरियाणा | प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज दीदी ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर बीके प्रियंका बहन एवं निर्मल बहन भी उपस्थित रहीं।

गॉडजी- गीता के उपदेशक फीचर फिल्म को सम्मान



शिव आमंत्रण,अबोहर, पंजाब | 'गॉडजी-गीता के उपदेशक' फिल्म को सर्वश्रेष्ठ प्रायोगिक फीचर फिल्म की श्रेणी में 17वां पुरस्कार प्रदान किए जाने पर लेखक-निर्देशक बीके पुष्पोष मिश्रा को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध अभिनेता आशीष नेहरा, आयोजक भूपिंदर उतेरेजा एवं शिवम कोहली उपस्थित रहे। अबोहर सेवाकेंद्र की बहनें भी मौजूद रहीं।

वोकाथॉन में नशामुक्ति का दिया संदेश



शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग | विश्व हृदय दिवस पर अपोलो अस्पताल की ओर से "आओ चलें, दिल की सुनें" संदेश के साथ जन-जागरुकता वोकाथॉन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल भी मौजूद रहे। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा सेवाकेंद्र की प्रभारी मंजू दीदी ने कहा कि परमात्मा प्रेम के सागर हैं। हमें नशामुक्त बनकर निःस्वार्थ प्रेम, शुभभावनाएं और दुआएं बांटनी चाहिए। दुआएं भी दवा का कार्य करती हैं। प्रेमपूर्ण व्यवहार और सकारात्मक सोच से मन को शांति मिलती है।

नशा-मुक्त युवा, विकसित भारत अभियान



शिव आमंत्रण, रांची, झारखंड | ब्रह्माकुमारीज़ चौधरी बागान, हरमू रोड में नशा-मुक्त युवा, विकसित भारत- 100 रविवार संकल्प अभियान" के अंतर्गत आयोजित "सुखम 100 कार्यक्रम" के अवसर पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते चार्टर्ड अकाउंटेंट एंजेला गोयनका, माय इंडिया की स्टेट डायरेक्टर ललिता कुमारी, संचालिका बीके निर्मला दीदी, माय इंडिया के यूथ आइकॉन डॉ. गौरव अग्रवाल ।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-
वार्षिक मूल्य 210 रुपए तीन वर्ष 630 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता
प्रधान संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8740060231, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer
A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331
Scan To Pay

मन को स्वस्थ एवं सकारात्मक बनाए रखने में मेडिटेशन की है महत्वपूर्ण भूमिका

शिव आमंत्रण, दुर्ग, छग।



ब्रह्माकुमारीज़ के बघेरा स्थित आनंद सरोवर में दिल्ली के ओम शांति रिट्रीट सेंटर से 42 भाइयों का आगमन हुआ। छत्तीसगढ़ प्रवास पर पहुंचे इन भाइयों का ब्रह्माकुमारी बहनों एवं स्थानीय भाई-बहनों ने आत्मीय स्वागत किया। इस अवसर पर दुर्ग सेवाकेंद्र की संचालिका रीटा दीदी ने कहा कि एक परमात्मा के घर से दूसरे परमात्मा के घर आए इन होली हंसों के मस्तक और नयनों से सौम्यता, मधुरता एवं पवित्रता झलकती है। ओम शांति रिट्रीट सेंटर की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया गया कि यहां समर्पित भाई-बहन ज्ञान, योग और आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में धारण कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दादी गुलजार, रिट्रीट सेंटर की निदेशिका बीके आशा दीदी तथा पूर्व महासचिव बीके बृजमोहन भाई के मार्गदर्शन से इन भाइयों ने अपने जीवन को आध्यात्मिक मूल्यों से समृद्ध बनाया है। कार्यक्रम में भाइयों का पुष्प एवं पट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। भाइयों ने रीटा दीदी और रूपाली दीदी का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। होम्योपैथी चिकित्सक दुर्गेश भाई ने मन और शरीर के स्वास्थ्य के संबंध में बताया कि मन को स्वस्थ एवं सकारात्मक बनाए रखने में मेडिटेशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बीके राजकुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सिंगरौली में कर्मयोग द्वारा सशक्त भारत विषय पर प्रशासक सम्मेलन आयोजित

अच्छे प्रशासक में स्नेह-प्यार, दया और करूणा होना जरूरी : बीके शैलजा दीदी



शिव आमंत्रण, सिंगरौली, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के तपोवन परिसर विंध्यनगर में प्रशासक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें नगर की कई कंपनियों के अधिकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। कर्मयोग द्वारा सशक्त भारत विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शैलजा दीदी ने कहा कि एक कुशल प्रशासक वही बन सकता है जिसने अपने जीवन में निरहंकारिता को अपनाया हो। कुशल प्रशासक में परोपकारी प्रवृत्ति, स्नेह-प्यार और दया - करूणा होना अत्यंत आवश्यक है। जब जीवन में आत्मविश्वास और परमात्म विश्वास होगा तो हम कुशल स्वप्रशासक बन सकते हैं। प्रशासन में लॉ और लव का बैलेंस रखना भी बहुत जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाए जाने वाला राजयोग मेडिटेशन से जीवन में उपरोक्त गुणों का विकास होता है। हम स्व प्रशासन की कला सीख जाते हैं जो श्रेष्ठ प्रशासन का आधार है।

माउंट आबू से पधारे कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी राजू भाई ने कहा कि राजयोगिनी अवधेश दीदी जी का जीवन कुशल प्रशासन का अदभुत उदाहरण है। उन्होंने श्रेष्ठ प्रशासन, अपनत्व, स्नेह, प्यार से पूरे प्रदेश में दो सौ से अधिक सेवाकेंद्र की स्थापना की और 550 भाई बहनों की विशाल टीम खड़ी कर दी। जो पूरे प्रदेश में शांति दूत बनकर ज्ञान गंगा बहा रहे हैं।

इस मौके पर एनटीपीसी के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर केके होता, कथावाचक विजयलक्ष्मी शुक्ला, रिलायंस के प्रेसिडेंट जितेंद्र प्रसाद, हिंडोलका के पूर्व एचआर तेज बहादुर माथुर, दतिया से आईं ब्रह्माकुमारी दीपा दीदी, भोपाल से आईं ब्रह्माकुमारी किरण दीदी और तपोवन की निदेशिका बीके शोभा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

जीवन में संतुष्टी का भाव होना जरूरी



शिव आमंत्रण, अंबिकापुर, छग। सरगुजा पुलिस द्वारा संचालित साइबर जागृति अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर साइबर अपराधों से बचाव के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें साइबर विशेषज्ञ अनुज जायसवाल एवं अविनाश पासवान तथा एयरटेल ग्राहक सेवा अधिकारी सिद्धार्थ पांडे ने साइबर ठगी के विभिन्न तरीकों और उनसे बचाव के उपायों की जानकारी दी। संचालिका ब्रह्माकुमारी विद्या दीदी ने कहा कि लालच से दूर रहेंगे तो ठगी से बचें रहें। जीवन में संतुष्टी का भाव होना जरूरी है।

कला-संस्कृति प्रभाग टीम की स्नेहपूर्ण भेंट



शिव आमंत्रण, उदयपुर, राज.।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डॉ. अश्विन भाई से कला-संस्कृति प्रभाग की टीम ने सौहार्दपूर्ण भेंट की। इस अवसर पर सांस्कृतिक गतिविधियों और कला-संस्कृति के माध्यम से समाज में सकारात्मक मूल्यों के प्रसार से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के सचिव पवन भाई, बीके नितिन भाई, बीके विवेक भाई, बीके भानु भाई, कला-संस्कृति प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके सतीश भाई, उदयपुर सेवाकेंद्र की संचालिका बीके रीटा बहन तथा बीके कल्पना बहन उपस्थित रहीं।

ओम शांति रिट्रीट सेंटर: युवाओं के लिए ओवरकमिंग ओवरथिंकिंग कार्यक्रम आयोजित

व्यर्थ विचारों से मन की ऊर्जा बचाना ही मानसिक शांति की कुंजी

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा।



आधुनिक जीवन की भागदौड़ और बाहरी दबावों के बीच मन को शांत रखना एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। बार-बार बीती बातों को याद करना, भविष्य की चिंता करना और नकारात्मक विचारों में उलझे रहना मानसिक ऊर्जा को कमजोर करता है। इसी विषय पर ब्रह्माकुमारीज के भोरा कलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर (ओआरसी) में रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 'ओवरकमिंग ओवरथिंकिंग' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि मन असीम शक्ति का स्रोत है, लेकिन व्यर्थ और नकारात्मक विचार इसकी ऊर्जा को नष्ट करते हैं। मन एक छोटे बच्चे की तरह है, जिसे दबाने के बजाय प्रेम और समझ से सही दिशा देनी चाहिए। बीती बातों को बार-बार सोचने के बजाय उनसे सीख लेकर आगे बढ़ना और जीवन में निमित्त भाव अपनाना आवश्यक है।

माउंट आबू से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गोपी दीदी ने कहा कि अभिमान और अपमान की भावनाएं अत्यधिक सोचने के प्रमुख कारण हैं। लक्ष्यविहीन जीवन भी मन में भटकाव और तनाव बढ़ाता है। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक ज्ञान व्यक्ति को अपनी वास्तविक पहचान समझने और बाहरी प्रभावों से मुक्त होने में मदद करता है। स्वमान और सकारात्मक दृष्टिकोण से विचारों को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।

पैनल चर्चा में रखे अपने विचार-

कार्यक्रम में आयोजित पैनल चर्चा में इंटरएक्टिव बीज कंपनी की निदेशक मोनिका गुप्ता, वित्तीय सलाहकार जतिन दुरेजा, बीके हुसैन और बीके प्रीति मदान ने विचार व्यक्त किए। वक्ताओं ने असफलता के भय को अत्यधिक सोचने का एक प्रमुख कारण बताते हुए राजयोग मेडिटेशन और सकारात्मक दृष्टिकोण को इससे उबरने के प्रभावी उपायों के रूप में प्रस्तुत किया। संचालन बीके फाल्गुनी ने किया। अंत में प्रतिभागियों को दैनिक जीवन में राजयोग मेडिटेशन और सकारात्मक चिंतन अपनाने का संकल्प कराया गया।



निःस्वार्थ स्नेह से समीपता और समर्थता

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

आज हम एक बहुत सुंदर और गहन विषय पर चिंतन करेंगे- निःस्वार्थ स्नेह से समीपता और समर्थता। निःस्वार्थ स्नेह वह है, जिसमें कोई अपेक्षा नहीं होती। सामान्यतः हम किसी से प्रेम करते हैं तो मन में यह भावना रहती है कि वह भी हमें उतना ही प्रेम दे, हमारी बात माने और हमें महत्व दे। लेकिन आध्यात्मिक स्नेह में लेने की इच्छा नहीं, बल्कि देने की भावना होती है। इसमें किसी के गुणों को देखकर प्रसन्न होते हैं, उसकी कमजोरियों को देखकर निराश नहीं होते और उसे श्रेष्ठ बनाने की शुभभावना रखते हैं। आत्मिक प्रेम का आधार शरीर, पद या व्यक्तित्व नहीं, बल्कि आत्मा है। जब हम हर आत्मा को परमात्मा की संतान समझकर सम्मान देते हैं, तब हमारे व्यवहार में सहजता और मधुरता आती है।

निःस्वार्थ स्नेह से समीपता

समीपता का अर्थ केवल किसी के पास बैठना या उसके साथ समय बिताना नहीं है। वास्तविक समीपता मन और संकल्पों की एकता से अनुभव होती है। परमात्मा शिव के प्रति सच्चा स्नेह हमें उनकी श्रीमत के समीप लाता है। जितना हमारा प्रेम सच्चा होगा, उतना ही हम परमात्मा के गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करेंगे। यदि हमें परमात्मा से प्रेम है, तो उनके बताए मार्ग पर चलना भी आवश्यक है। जैसे-जैसे हम अपने संकल्पों, वाणी और कर्मों को श्रेष्ठ बनाते हैं, वैसे-वैसे परमात्मा के साथ आत्मिक संबंध की अनुभूति गहरी होती जाती है। स्नेह ऐसा हो, जो दूसरों को परमात्मा के समीप लाने का माध्यम बने। हमारा व्यवहार किसी को निराश करने वाला नहीं, बल्कि उमंग-उत्साह बढ़ाने वाला हो।

समर्थता का आधार आत्मिक शक्ति

समर्थता का अर्थ केवल शारीरिक क्षमता या कार्य करने की योग्यता नहीं है। आध्यात्मिक समर्थता का अर्थ है- परिस्थितियों में शांत रहना, विपरीत स्वभाव वाले व्यक्ति को स्वीकार करना, अपनी कमजोरियों पर विजय पाना और हर परिस्थिति में परमात्मा की याद बनाए रखना। जब हमारे भीतर निःस्वार्थ स्नेह होता है, तब हम दूसरों की कमियों को देखकर प्रतिक्रिया देने के बजाय उन्हें सहयोग देने का प्रयास करते हैं। स्नेह हमारी सहनशक्ति बढ़ाता है और योग हमें निर्णय लेने की शक्ति देता है।

स्नेह और समर्थता का संतुलन

सच्चा स्नेह किसी की कमजोरी को बढ़ावा देना नहीं है। स्नेह के साथ सत्यता, विवेक और मर्यादा भी आवश्यक हैं। किसी को उसकी गलती का एहसास कराना हो, तो हमारे शब्दों में सम्मान और शुभभावना हो। हमारा उद्देश्य किसी को गलत सिद्ध करना नहीं, बल्कि उसे श्रेष्ठ बनने में सहयोग देना हो। हम अपने अंदर ऐसी विशेषता विकसित करें कि हमारे संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति शांति, अपनापन और आत्मिक शक्ति का अनुभव करे। जब भी कोई हमसे मिले तो उस आत्मा को महसूस हो कि मैं किसी विशेष आत्मा, दिव्य आत्मा, पवित्र आत्मा से मिल रही हूं।

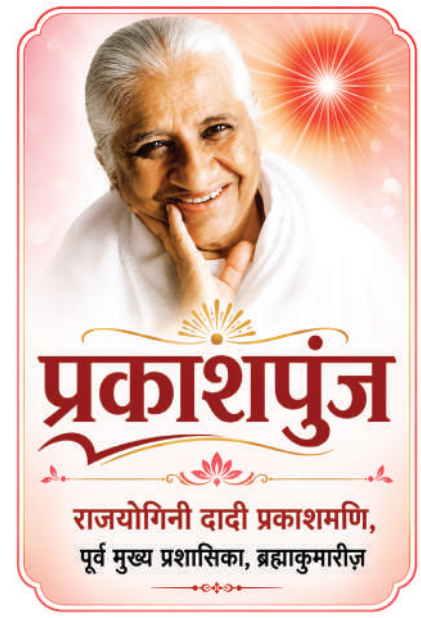
आज स्वयं से तीन प्रश्न पूछें-

- क्या मेरे स्नेह में कोई अपेक्षा छिपी हुई है?
- क्या मैं विपरीत परिस्थिति में भी शांत और शुभचिंतक रह सकता हूं?
- क्या मेरे संपर्क से दूसरों की आत्मिक शक्ति बढ़ती है?
- संकल्प लें- मैं हर आत्मा को सम्मान दूंगा, निःस्वार्थ भाव से स्नेह दूंगा और परमात्मा शिव की याद से स्वयं को समर्थ बनाऊंगा।

अपेक्षाएं आत्मिक उन्नति में बनती हैं बाधक

जब तक हमें अपनी कमजोरी का एहसास नहीं होता, तब तक उसे दूर करने का प्रयास भी नहीं होता। कई बार हम दूसरों की कमियों को जल्दी देख लेते हैं, लेकिन अपनी कमियों को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, आलस्य, व्यर्थ चिंतन, नकारात्मकता और दूसरों से अपेक्षाएं रखना हमारी आत्मिक उन्नति में बाधक बन सकते हैं।

हमें आत्म निरीक्षण की आदत डालनी चाहिए। प्रतिदिन स्वयं से पूछें- आज मेरे किस संस्कार ने मुझे कमजोर बनाया? किस परिस्थिति में मैंने धैर्य खोया? कहां मैंने अपनी वाणी या व्यवहार से किसी को दुख पहुंचाया? यह आत्मचिंतन स्वयं को दोषी ठहराने के लिए नहीं, बल्कि स्वयं को बेहतर बनाने के लिए होना चाहिए।



परमात्मा की याद से मिले आत्मिक शक्ति

आत्मा मूल रूप से शांत, पवित्र और शक्तिशाली है। लेकिन देह-अभिमान और पुराने संस्कारों के प्रभाव से आत्मा अपनी शक्तियों को भूल जाती है। राजयोग ध्यान हमें अपने वास्तविक स्वरूप की स्मृति दिलाता है और परमात्मा शिव से संबंध जोड़ने का अभ्यास कराता है। जब हम स्वयं को ज्योति स्वरूप आत्मा अनुभव करते हैं और परमात्मा को शांति, प्रेम तथा शक्ति के सागर के रूप में याद करते हैं, तब मन को सकारात्मक दिशा देने में सहायता मिलती है। कमजोरी के समय स्वयं को याद दिलाएं- मैं कमजोर संस्कारों के अधीन होने वाली आत्मा नहीं, बल्कि अपने विचारों और कर्मों को श्रेष्ठ बनाने का अभ्यास करने वाली शक्तिशाली आत्मा हूं।

दृढ़ संकल्प से बदलें पुराने संस्कार

केवल कमजोरी को पहचान लेना पर्याप्त नहीं है, उसके स्थान पर श्रेष्ठ संस्कार धारण करना भी आवश्यक है। यदि क्रोध कमजोरी है, तो शांति का अभ्यास करें। यदि आलस्य बाधक है, तो समय की पाबंदी अपनाएं। यदि ईर्ष्या आती है, तो दूसरों की विशेषताओं को देखकर प्रसन्न होना सीखें। यदि व्यर्थ चिंतन अधिक होता है, तो मन को सकारात्मक कार्यों में लगाएं। हमें भी अपने संकल्पों में दृढ़ रहना चाहिए। परिवर्तन एक दिन में नहीं होता, लेकिन नियमित अभ्यास से पुराने संस्कारों की पकड़ कमजोर की जा सकती है।

दोष देने के बजाय स्वयं को बदलें

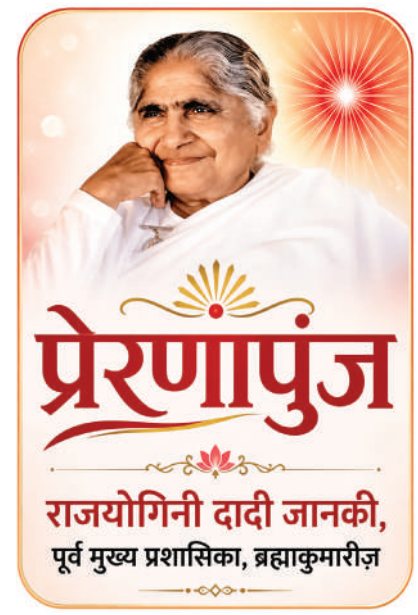
अक्सर हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति के कारण मुझे क्रोध आया या परिस्थिति के कारण मेरा मन खराब हुआ। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से हमें अपने मन की जिम्मेदारी स्वयं लेनी चाहिए। दूसरे व्यक्ति का व्यवहार हमारे नियंत्रण में नहीं है, परंतु अपनी प्रतिक्रिया पर अभ्यास द्वारा नियंत्रण बढ़ाया जा सकता है। जब कोई विपरीत परिस्थिति आए, तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय कुछ क्षण रुकें। गहरी सांस लें, स्वयं को आत्मा समझें और सोचें- इस समय मेरी श्रेष्ठ प्रतिक्रिया क्या हो सकती है? यही अभ्यास धीरे-धीरे आत्मिक शक्ति को बढ़ाता है।

कमजोरियों के त्याग के लिए तीन अभ्यास अपनाएं- राजयोग ध्यान के अभ्यास के साथ, दिनभर अपने विचारों, वाणी और व्यवहार पर ध्यान रखें। रात्रि को आत्मचिंतन करके अगला दिन बेहतर बनाने का संकल्प लें।

विचारों को साक्षी भाव से देखना ही अंतर्मुखता

अंतर्मुखता केवल आंखें बंद कर लेना या संसार से अलग बैठ जाना नहीं है। अंतर्मुखता वह आध्यात्मिक अवस्था है, जहां आत्मा बाहरी संसार की हलचल से अपनी बुद्धि को समेटकर स्वयं के सत्य स्वरूप में स्थित होने लगती है। जैसे समुद्र की सतह पर लहरें उठती रहती हैं, लेकिन गहराई में एक अलग शांति होती है, वैसे ही जीवन की परिस्थितियों के बीच आत्मा अपने आंतरिक मौन को अनुभव कर सकती है। यही है अंतर्मुखता की गुफा।

हमारी दृष्टि सदैव बाहर की ओर रहती है। कौन क्या कह रहा है, कौन हमें कितना महत्व दे रहा है, परिस्थितियां हमारे अनुकूल हैं या प्रतिकूल- इन्हीं बातों में मन उलझा रहता है। धीरे-धीरे हमारी खुशी दूसरों के व्यवहार पर और हमारी शांति परिस्थितियों पर निर्भर होने लगती है। अंतर्मुखता हमें इस निर्भरता से मुक्त होने का मार्ग दिखाती है। यह स्वयं से प्रश्न करने की कला है- मैं कौन हूं? क्या मेरी पहचान दूसरों की राय है, मेरा पद है, मेरा शरीर है, या इन सबसे न्यारी चेतन सत्ता आत्मा है? जब बुद्धि इस सत्य में स्थिर होने लगती है कि मैं ज्योति स्वरूप आत्मा हूं, तब बाहरी परिचयों का प्रभाव कम होने लगता है। आत्मा अपने मूल गुणों- शांति, प्रेम, पवित्रता और आनंद की ओर लौटने का अनुभव करती है। अंतर्मुखता की पहली सीढ़ी है, दूसरों को देखने से पहले स्वयं को देखना।



मौन के भीतर छिपा है आत्मिक संसार

शारीरिक मौन सरल है, लेकिन संकल्पों का मौन गहन अभ्यास मांगता है। हम बोलना बंद कर दें, फिर भी मन में पुरानी घटनाओं के संवाद चलते रहते हैं। शरीर एकांत में होता है, लेकिन बुद्धि संसार की अनेक परिस्थितियों में भटकती रहती है। वास्तविक अंतर्मुखता तब आरंभ होती है, जब हम विचारों के पीछे भागने के बजाय उन्हें साक्षी भाव से देखने लगते हैं। कोई पुरानी बात याद आए तो उसमें डूबने के बजाय उसे पहचानें। कोई अपमान याद आए तो बार-बार उसे दोहराने के बजाय अपने स्वमान में स्थित हों। कोई भविष्य की चिंता आए तो व्यर्थ कल्पनाओं से निकलकर वर्तमान कर्तव्य पर ध्यान दें। यह मौन विचारों को जबरन रोकना नहीं, बल्कि उन्हें श्रेष्ठ दिशा देना है। जब व्यर्थ संकल्पों की पकड़ ढीली होती है, तब आत्मा अपनी आंतरिक स्थिति को अधिक स्पष्टता से अनुभव कर सकती है।

पवित्रता की वास्तविक परीक्षा हमारे विचारों में होती है

पवित्रता केवल बाहरी स्वच्छता या आचरण की मर्यादा का नाम नहीं है, बल्कि यह आत्मा की वह दिव्य अवस्था है, जिसमें हमारे संकल्प, दृष्टि, वृत्ति और कर्म निर्मलता से परिपूर्ण होते हैं। पवित्रता की वास्तविक परीक्षा हमारे विचारों में होती है। कई बार हमारा व्यवहार बाहर से मधुर होता है, लेकिन मन में ईर्ष्या, तुलना, आलोचना या किसी के प्रति द्वेष चलता रहता है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए केवल वाणी और कर्म को नहीं, बल्कि संकल्पों को भी श्रेष्ठ बनाना आवश्यक है।

जब हम किसी की कमी देखते हैं, तब उसके प्रति नकारात्मक विचार करने के बजाय उसकी विशेषताओं को देखने का अभ्यास करें। जब किसी की सफलता देखकर मन में तुलना उत्पन्न हो, तब अपनी विशेषताओं को पहचानें और दूसरे की सफलता में प्रसन्न होना सीखें। यही संकल्पों की पवित्रता का अभ्यास है। परमात्मा शिव परम पवित्र और सर्वगुणों के सागर हैं। राजयोग ध्यान से आत्मा परमात्मा से संबंध जोड़कर अपने मूल गुणों को जागृत करने का अभ्यास करती है। जब आत्मा स्वयं को ज्योति स्वरूप अनुभव करते हुए परमात्मा शिव को याद करती है, तब वह अपने विचारों और संस्कारों को श्रेष्ठ दिशा देने का पुरुषार्थ करती है। परमात्मा की याद केवल कुछ समय बैठने तक सीमित न रहे, बल्कि हमारे व्यवहार और निर्णयों में भी दिखाई दे। यही योग की व्यावहारिक सफलता है। पवित्र दृष्टि का अर्थ है प्रत्येक आत्मा को सम्मान देना और उसके वास्तविक स्वरूप को पहचानने का प्रयास करना। जब हमारी वृत्ति में स्वार्थ, अपेक्षा और अधिकार की भावना कम होती है, तब संबंधों में सहजता और विश्वास बढ़ता है। हम अपने व्यवहार में सरलता, मर्यादा और निःस्वार्थ सेवाभाव को स्थान दें। पवित्रता किसी से दूरी बनाना नहीं, बल्कि संबंधों में रहते हुए भी अपनी आंतरिक निर्मलता को बनाए रखना है।



स्वयं से पूछें- क्या मेरे विचार शुभ हैं? क्या मेरी दृष्टि में आत्मिक सम्मान है? क्या मेरे शब्द किसी को शांति देते हैं? क्या मेरे कर्मों में स्वार्थ के बजाय सेवा की भावना है?



श्रेष्ठ संस्कारों से बनेगा श्रेष्ठ भारत: चक्रधारी दीदी

रायपुर में महिला उत्थान आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के महिला प्रभाग की ओर से 'विश्व नवनिर्माण में महिलाओं की भूमिका' विषय पर महिला उत्थान आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी बहनों, जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों और प्रबुद्ध महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण, आध्यात्मिकता तथा परिवार एवं समाज में श्रेष्ठ संस्कारों की भूमिका पर विचार रखे।

ब्रह्माकुमारीज महिला प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं रूस स्थित सेवाकेंद्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी ने कहा कि केवल भौतिक साधनों से सच्चा सुख और शांति प्राप्त नहीं हो सकती। स्वयं को शांत एवं पवित्र आत्मा समझकर जीवन में दिव्य संस्कार अपनाने से श्रेष्ठ समाज का निर्माण संभव है। उन्होंने कहा कि विश्व परिवर्तन के लिए ज्ञान का कलश माताओं और बहनों को सौंपा गया है। रूस में राजयोग की शिक्षा के साथ सात्विक भोजन की प्रेरणा देने के अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि आध्यात्मिकता के माध्यम से जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। माउंट आबू से पधारीं महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सविता दीदी ने कहा कि आंतरिक मूल्यों, श्रेष्ठ संस्कारों और मानसिक शांति का संतुलन भी आवश्यक है। समाज रूपी गाड़ी के संचालन के लिए स्त्री और पुरुष दोनों का समान रूप से सशक्त होना जरूरी है। मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद लक्ष्मी वर्मा, राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व महापौर डॉ. किरणमयी नायक, रायपुर की संचालिका बीके सविता दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।



सफलता प्राप्त करने के बताए सूत्र

शिव आमंत्रण, मीरजापुर, उप्र। अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से 22 से 24 सितंबर तक मीरजापुर एवं भदोही के तीन शिक्षण संस्थानों में प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किए गए। अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट से पधारीं डॉ. बीके सुनीता दीदी ने विद्यार्थियों और शिक्षकों को "सकारात्मक बने रहें, चाहे कुछ भी हो!" विषय पर संबोधित किया।

डॉ. सुनीता दीदी ने कहा कि परिस्थितियां हमेशा हमारे अनुकूल नहीं होतीं, लेकिन उनके प्रति हमारी सोच और प्रतिक्रिया हमारे हाथ में होती है। सकारात्मक चिंतन कठिनाइयों में समाधान खोजने, आत्मविश्वास बनाए रखने और आगे बढ़ने की शक्ति देता है। उन्होंने आत्मसम्मान, अनुशासन, नैतिक मूल्यों और राजयोग ध्यान के माध्यम से मन को शांत एवं शक्तिशाली बनाने की प्रेरणा दी। 22 सितंबर को केबीपीजी कॉलेज, मीरजापुर में आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. रविंद्र कुमार द्विवेदी, सहप्राचार्य प्रो. भवभूति मिश्र सहित शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। 23 सितंबर को राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, जगन्नाथपुर, भदोही में और 24 सितंबर को स्वामी गोविंदाश्रम पीजी कॉलेज, पैड़ापुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया।



सफलता पहचान देती है, परिवार अपनापन देता है

शिव आमंत्रण, भिलाई, छग।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के उपलक्ष्य में सेक्टर-7 स्थित पीस ऑडिटोरियम में आंतरिक शक्ति से सशक्त नारी- विश्व शांति की शिल्पकार विषय पर महिला महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं महिला संगठनों से जुड़ी बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया।

रूस स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्रों की निदेशिका एवं महिला प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी ने कहा कि सफलता व्यक्ति को पहचान देती है, जबकि परिवार अपनापन देता है। हमारे विचार ही हमारी ऊर्जा हैं और संकल्पों से ही हमारे जीवन की दिशा निर्धारित होती है। मन को सकारात्मक एवं शांत रखना सफलता और सुखी जीवन के लिए आवश्यक है।

माउंट आबू से पधारीं डॉ. सविता बहन ने कहा कि वर्तमान समय में विश्व हिंसा और युद्ध के संकट से जूझ रहा है। वास्तविक शांति सकारात्मक दृष्टिकोण और आध्यात्मिकता से प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि शांति किसी स्थान में नहीं, बल्कि हमारे विचारों में होती है। नकारात्मक विचार चिंता और तनाव बढ़ाते हैं, जबकि सकारात्मक विचार सुख, शांति और संतुष्टि प्रदान करते हैं। उन्होंने सहनशीलता, त्याग, सेवा और करुणा जैसे गुणों को अपनाकर परिवार एवं समाज में शांति स्थापित करने का आह्वान किया। भिलाई सेवा केंद्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि माताएं और बहनें अपने प्रेम, करुणा, आत्मबल एवं आध्यात्मिक शक्ति से परिवार और समाज में शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सम्मेलन में स्वयं, परिवार और समाज सहित विश्व में शांति स्थापित करने का संदेश दिया गया।



सकारात्मकता, शिक्षा, स्वीकार्यता, शीतलता और सहजता से घर बनेगा मंदिर

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ के महिला संगठन शिवशक्ति लीडरशिप एप्रोच के अंतर्गत "करुणामय शिवशक्ति नेतृत्व- शांति ही शक्ति है" विषय पर रचनात्मक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें महिलाओं को विपरीत परिस्थितियों में शांति, क्षमाशीलता और करुणा के साथ व्यवहार करने की प्रेरणा दी गई। शुभारंभ छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. ममता साहू, माउंट आबू की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका डॉ. सुनीता दीदी, रायपुर संचालिका बीके सविता दीदी, जनसंपर्क विभाग की सहायक संचालक आमना मीर, हरिभूमि-आईएनएच की वरिष्ठ प्रोड्यूसर मधुमिता पाल, छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की पूर्व अध्यक्ष शताब्दि पाण्डे, दूरदर्शन की पत्रकार रूमा सेन गुप्ता, सहायक समाचार संपादक शगुफ्ता शिरीन, कांग्रेस प्रवक्ता प्रगति वाजपेयी, विस्तार न्यूज की एंकर रसिका पांडे, महर्षि विद्यालय की प्राचार्या मोनिका मिश्रा और अखिल भारतीय क्षत्रिय वीरांगना महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतू सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके सुदेश दीदी ने वीडियो संदेश के माध्यम से शांति का महत्व समझाया। उन्होंने शांति के पुष्प की पांच पंखुड़ियों को सकारात्मकता, शिक्षा, स्वीकार्यता, शीतलता और सहजता से जोड़ते हुए कहा कि इन गुणों को अपने जीवन में विकसित करें और अपने घर को मंदिर बनाएं।

गीता के आध्यात्मिक संदेश से जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा





शिव आमंत्रण, जालंधर, पंजाब।

आदर्श नगर स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र में जीवन का आधार- गीता का सार विषय पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्यालय से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता राजयोगिनी बीके उषा दीदी ने गीता के आध्यात्मिक संदेश को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। शुभारंभ नंगल सेवाकेंद्र की प्रभारी राजयोगिनी बीके पुष्पा दीदी ने संस्था के परिचय एवं उसकी आध्यात्मिक सेवाओं की जानकारी के साथ किया। कपूरथला सेवाकेंद्र की प्रभारी राजयोगिनी बीके लक्ष्मी दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए सभी को अभ्यास कराया।

बीके उषा दीदी ने कहा कि गीता केवल पढ़ने का ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली आध्यात्मिक शिक्षा है। मनुष्य की वास्तविक पहचान शरीर नहीं, बल्कि शांत, पवित्र और शक्तिशाली आत्मा है। आत्म-स्मृति में स्थित होकर व्यक्ति अपने विचारों और कर्मों को श्रेष्ठ बना सकता है। उन्होंने कहा कि परिस्थितियां हमारे हाथ में नहीं होतीं, लेकिन उनके प्रति हमारी प्रतिक्रिया हमारे हाथ में होती है। राजयोग के अभ्यास से मन शांत और बुद्धि स्थिर होती है। कर्म करते हुए परमात्मा की स्मृति में रहना ही गीता के कर्मयोग का सार है। कार्यक्रम के अंत में जालंधर सेवाकेंद्र की मुख्य प्रभारी बीके संधीरा दीदी ने बीके उषा दीदी सहित सभी अतिथियों एवं उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया।



शिव शक्ति लीडरशिप एप्रोच कार्यशाला आयोजित

शिव आमंत्रण, जबलपुर, मप्र। कटंगा कॉलोनी स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से 'शिव शक्ति लीडरशिप एप्रोच प्रोग्राम' के अंतर्गत 'शिव शक्ति ही प्रथम प्रेरणा' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की पूर्व न्यायाधीश अंजलि पाल ने उपस्थित होकर अपनी शुभकामनाएं दीं।

शिव शक्ति प्रोग्राम की इंडिया की फोकल पाइंट को-ऑर्डिनेटर बीके डॉ. सुनीता चांडक, मप्र महिला आयोग की पूर्व सदस्य सोनल अमिन तथा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके विमला दीदी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यशाला का उद्देश्य महिलाओं में नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और आध्यात्मिक मूल्यों को प्रोत्साहित करना रहा।



साढ़े तीन साल में साढ़े सात करोड़ लोगों को कराया नशामुक्ति का संकल्प

उत्कृष्ट सेवा पर पंजाब जोन की ब्रह्माकुमारी बहनें सम्मानित

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मेडिकल विंग द्वारा संचालित नशामुक्त भारत अभियान के तहत देशभर में साढ़े तीन साल में साढ़े सात करोड़ लोगों को नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प कराया गया है। इस उपलब्धि के लिए इंडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड और लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने अभियान को वर्ल्ड रिकॉर्ड के रूप में मान्यता प्रदान की है।

शांतिवन में आयोजित सम्मान समारोह में दोनों वर्ल्ड रिकॉर्ड संस्थाओं के प्रतिनिधि डॉ. दीपक हरके और मिस इंडिया ईशा अग्रवाल ने अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी, महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई, मेडिकल विंग के उपाध्यक्ष डॉ. प्रताप मिड्ढा और सचिव डॉ. बनारसी लाल को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर मेडिकल विंग की ओर से दस करोड़ लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाने के लक्ष्य के तहत उत्कृष्ट सेवा करने वाले संस्थान के विभिन्न सेवाकेंद्रों की इंचार्ज वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी बहनों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। सबसे पहले पंजाब जोन की इंचार्ज बीके प्रेम दीदी का सम्मान किया गया। बता दें कि नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत मार्च 2023 से सितंबर 2026 तक देशभर में संस्थान के विभिन्न सेवाकेंद्रों के माध्यम से साढ़े सात करोड़ लोगों को नशामुक्त रहने की प्रतिज्ञा कराई गई। मेडिकल विंग के उपाध्यक्ष डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि नशा व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उसके पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित करता है। नशामुक्ति के लिए जागरूकता, सही मार्गदर्शन और निरंतर सहयोग आवश्यक है। मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल ने कहा कि साढ़े सात करोड़ लोगों तक नशामुक्ति का संकल्प पहुंचना सामूहिक सेवा और निरंतर प्रयासों का परिणाम है। अभियान का उद्देश्य केवल लोगों को प्रतिज्ञा कराना नहीं, बल्कि उनके जीवन में स्थायी सकारात्मक परिवर्तन लाना है।



ऐसा श्रद्धा का उत्सव, श्रद्धा का सैलाब पहली बार देखा-

पंजाब राजपुरा से पधारे, 50 हजार से अधिक किमी की पैदल यात्रा कर चुके डॉ. अरविंद मुनि महाराज ने कहा कि मैंने जीवन में पहली शांतिवन में ऐसा श्रद्धा का उत्सव, श्रद्धा का सैलाब पहली बार देखा। परमात्म मिलन में मैंने अनुभूति की कि जैसे बाबा मुझसे कह रहे हैं कि इस परमात्म संदेश को आगे बढ़ाने में आपको भूमिका निभानी है। आज से 11 साल पहले दादी जानकी जी की प्रेरणा से मैं ब्रह्माकुमारीज़ में आया। प्रभु मिलन के लिए मैंने जीवन में दो ही बार उत्सव देखे हैं। एक जैन परंपरा में पर्युषण पर्व में सब प्रभु मिलन में डूब जाते हैं, दूसरा यहां ब्रह्माकुमारीज़ में देखा। जहां हजारों लोग प्रभु मिलन के लिए पूरे डूब जाते हैं। महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि नशामुक्त समाज का निर्माण केवल किसी एक संस्था का कार्य नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

भाजपा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर अटलादरा सेवाकेंद्र में किया सम्मान

परमात्मा की दृष्टि में नई शुरुआत का समय



शिव आमंत्रण, बडोदरा, गुजरात।

'भारत द लाइट हाउस' विशेष कार्यक्रम के तहत राजयोगिनी शिवानी दीदी का गुजरात की संस्कारी नगरी बड़ौदा में आगमन हुआ। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ अटलादरा सेवाकेंद्र में गुजरात जोन की इंचार्ज भारती दीदी, राजयोगिनी शिवानी दीदी एवं वरिष्ठ बहनों ने सांसद डॉ. हेमांग जोशी को भाजपा युवा मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर सम्मानित किया। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी डॉ. मेघना जोशी भी उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम में आंबावाड़ी सबजोन की इंचार्ज शारदा दीदी, मेहसाणा सबजोन की इंचार्ज सरला दीदी, मणिनगर सबजोन की इंचार्ज नेहा दीदी, अटलादरा सेवाकेंद्र की संचालिका बीके डॉ. अरुणा बहन और सह-संचालिका बीके पूनम बहन सहित वरिष्ठ बहनें उपस्थित रहीं।

राजयोगिनी शिवानी दीदी ने कहा कि वर्तमान समय में विश्व अनेक प्रकार की हलचलों से गुजर रहा है, लेकिन परमात्मा की दृष्टि में यह एक नई शुरुआत का समय भी है। डॉ. हेमांग जोशी ने ने कहा कि वे स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें भारती दीदी, शिवानी दीदी और अनेक राजयोगी तपस्वी बहनों का स्नेह, सम्मान और आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

उन्होंने कहा कि परमात्मा की शक्तियां सदैव हमारे साथ होती हैं, आवश्यकता केवल उन्हें अनुभव करने की है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सभी देशवासियों के सामूहिक संकल्प से विकसित भारत का लक्ष्य अवश्य पूरा होगा। सम्मान समारोह के बाद मंचासीन अतिथियों ने सेवाकेंद्र में नवनिर्मित भंडारे का अवलोकन भी किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में भाई-बहनें मौजूद रहे।



वाराणसी में ऋतेश्वर महाराज से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, वाराणसी। श्री आनंदमधाम ट्रस्ट, वृन्दावन के पीठाधीश्वर ऋतेश्वर महाराज के एपीएस ग्रुप द्वारा आयोजित सदुरु सानिध्य कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनों ने आत्मीय मुलाकात की। संस्था के क्षेत्रीय मुख्यालय सारनाथ के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेन्द्र भाई के नेतृत्व में शाखा प्रभारी बीके राधिका बहन, सह-प्रभारी बीके तापोशी बहन, बीके विपिन बहन, बीके संदीप भाई सहित अन्य सदस्यों ने महाराज को ईश्वरीय संदेश, स्मृति चिह्न एवं गुलदस्ता भेंट कर अभिनंदन किया। ऋतेश्वर महाराज ने मुख्यालय की अपनी सुखद यात्रा के अनुभव साझा किए। उन्होंने अंगवस्त्र पहनाकर संस्था के प्रतिनिधियों का स्वागत भी किया। कार्यक्रम में बीके अनिता बहन, बीके गंगाधर भाई, बीके खुशी बहन सहित आयोजक विनीत सिंह, केदारनाथ सिंह भी मौजूद रहे।



पत्रकार स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह आयोजित

पत्रकार अपनी लेखनी से हजारों लोगों की दुआएं और पुण्य कमा सकते हैं : छाया दीदी

शिव आमंत्रण, सागर, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मकरोनिया सेवाकेंद्र पर मीडिया विंग द्वारा पत्रकार स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें सभी पत्रकारों का पगड़ी, पट्टा और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

सागर क्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी छाया दीदी ने कहा कि पत्रकार भाई - बहनों से यही आह्वान है कि परमात्मा के दिव्य संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं। आप अपनी लेखनी से हजारों लोगों की दुआएं और पुण्य कमा सकते हैं। कथावाचक बीके नीलम दीदी ने कहा कि खुशी हमारा गहना है। खुशी जैसी कोई खुराक नहीं है। इसलिए कुछ भी हो जाए जीवन में खुशी नहीं जाए। हम इतना खुश रहें कि लोग हमें देख कर खुश हो जाएं। पीएम कॉलेज की प्रो. डॉ. ऋतु बहन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी में एक बात सिखाई जाती है कि कोई बदले या नहीं बदले, सबसे पहले मुझे स्वयं को बदलना है। हम बदलेंगे, जग बदलेगा।

इंक मीडिया इंस्टीट्यूट के निदेशक एवं मोटीवेशनल स्पीकर डॉ. आशीष द्विवेदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज समाज में आशा का दीपक बनकर ज्ञान प्रकाश फैला रहा है। मुख्यालय माउंट आबू में न केवल श्वेत वस्त्र धारी लोग रहते हैं बल्कि उनके विचार, संकल्प और कर्म भी वस्त्रों के समान पवित्र हैं।

माउंट आबू से आए शिव आमंत्रण के संपादक बीके पुष्पेंद्र भाई ने कहा कि आपकी कलम किसी को उठाने का जरिया बने न की गिराने का। समाज मीडिया का आशा भरी नजरों से देखता है। लाखों की संख्या में ब्रह्माकुमारी के अनेक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन इस बात का प्रमाण हैं कि आज भी लोग अच्छी, प्रेरक, सकारात्मक, नई दिशा देने वाली खबरों को देखना, सुनना और पढ़ना पसंद करते हैं। दैनिक भास्कार के समाचार संपादक प्रमोद चौबे ने भी संबोधित किया।

संचालन करते हुए बीके लक्ष्मी दीदी ने कहा कि आज यहां से आप सभी संकल्प लेकर जाएं कि मुझे अपने घर का दीपक खुद बनना है। इस मौके पर बीके सीता दीदी, बीके संध्या दीदी, बीके खुशबू दीदी, बीके मुकेश भाई, बीके पीयूष भाई सहित बड़ी संख्या में पत्रकार भाई बहनें मौजूद रहे।



शिव आमंत्रण, सिलवानी, मप्र। ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर पत्रकार स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें सागर की क्षेत्रीय निदेशिका बीके छाया दीदी, कथावाचक बीके नीलम दीदी, माउंट आबू से आए शिव आमंत्रण के संपादक बीके पुष्पेंद्र भाई, सिलवानी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मोहिनी दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए। गैरत गंज से आईं बीके ज्योति दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई। संचालन बीके लक्ष्मी दीदी ने किया।

ब्रह्माकुमारीज आनंद सरोवर बघेरा में नशामुक्त भारत का लिया संकल्प

10 करोड़ नशा मुक्ति प्रतिज्ञा महाअभियान का शुभारंभ



शिव आमंत्रण, दुर्ग, छग।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, आनंद सरोवर बघेरा में दादी प्रकाशमणि जी की स्मृति में 10 करोड़ नशा मुक्ति प्रतिज्ञा महाअभियान के अंतर्गत नशामुक्त भारत अभियान का शुभारंभ छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री गजेंद्र यादव ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में संभाग आयुक्त सत्य नारायण राठौर, एसपी एसटीएफ जयंत वैष्णव, एडिशनल एसपी कौशलेन्द्र देव पटेल, भाजपा जिला उपाध्यक्ष शिवेंद्र प्रताप सिंह, दुर्ग की संचालिका बीके रीटा दीदी एवं बीके रूपाली दीदी सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। अतिथियों का सम्मान किया गया तथा कुमारियों ने नशामुक्ति संदेश पर स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया।

मंत्री गजेंद्र यादव ने कहा कि नशामुक्त भारत के निर्माण में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है। बीके रूपाली दीदी ने शराब, तंबाकू के साथ मोबाइल और इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग को भी व्यसन बताते हुए राजयोग मेडिटेशन को मन सशक्त बनाने का प्रभावी माध्यम बताया।

संभाग आयुक्त सत्य नारायण राठौर और एसपी एसटीएफ जयंत वैष्णव ने भी नशामुक्त जीवन अपनाने की अपील की।

विदेश सेवा समाचार



मुंबई। ब्रह्माकुमारीज ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर द्वारा संचालित विले पार्ले स्थित बीएसईएस एमजी हॉस्पिटल को प्रतिष्ठित हेल्थकेयर अवार्ड से सम्मानित किया गया। महान क्रिकेटर एवं पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने अस्पताल को यह पुरस्कार प्रदान किया। अस्पताल की प्रबंध निदेशक राजयोगिनी बीके योगिनी दीदी की ओर से बीके प्रतिभा बहन ने सम्मान स्वीकार किया। इस अवसर पर बीके क्रीना दीदी और बीके डॉ. दीपक हरके भी उपस्थित रहे।



गंजबासौदा, मध्य प्रदेश। मध्य प्रदेश शासन की महिला एवं बाल विकास विभाग की कैबिनेट मंत्री निर्मला भूरिया एवं गंजबासौदा नगर पालिका अध्यक्ष शशि यादव को ब्रह्माकुमारी नंदिनी दीदी ने ईश्वरीय सौगात भेंट कर शुभकामनाएं दीं। साथ ही आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से जीवन में सकारात्मकता, शांति और नैतिक मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया।



राउरकेला, ओडिशा। 10 करोड़ नशामुक्ति प्रतिज्ञा महाअभियान के अंतर्गत सुंदरगढ़ जिले के बिसरा स्थित एस. आर. हायर सेकेंडरी स्कूल, संतोषपुर में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कक्षा 11वीं के 188 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम प्रिंसिपल खिरोद कुमार बराल की उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मेडिकल विंग के वक्ता बीके राजीव ने नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करते हुए नशामुक्त जीवन अपनाने की प्रेरणा दी। अभियान को सफल बनाने में बिसरा क्षेत्र की राजयोगिनी इतिश्री बहन और बीके चित्तरंजन भाई का विशेष सहयोग रहा।



बैतूल, मप्र। ब्रह्माकुमारीज द्वारा "सत्कर्म ही सच्चा तर्पण" विषय पर विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और शुभभावना रखते हुए श्रेष्ठ कर्म अपनाने का संदेश दिया गया। बैतूल सेवा केंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी ने कहा कि पितरों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर श्रेष्ठ संस्कारों और सत्कर्मों को अपनाना है। सारणी सेवा केंद्र प्रभारी बीके सुनीता दीदी ने कहा कि पूर्वजों की स्मृति हमें सकारात्मकता, मानवता और श्रेष्ठ संस्कारों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा देती है। कार्यक्रम में सभी भाई-बहनों ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर पितृ आत्माओं की शांति, शक्ति और उन्नति के लिए शुभ संकल्प किए। परमात्म स्मृति में पितरों को ब्रह्म भोजन स्वीकार कराया गया तथा सभी आत्माओं के प्रति प्रेम, शांति के वाइब्रेशन दिए गए।

राजयोग से तन-मन की स्थिरता, चैतन्य देवियों की झांकी बनी आकर्षण का केंद्र



शिव आमंत्रण, भिलाई, छग। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, सेक्टर-7 राजयोग भवन में शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर ध्वनि एवं प्रकाश के सुंदर समायोजन से सजी चैतन्य देवियों की झांकी का शुभारंभ शिवशक्ति स्वरूपा ब्रह्माकुमारी दीदियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। विशाल पर्वत श्रृंखलाओं, गुफाओं और पहाड़ियों के बीच एक के बाद एक चैतन्य देवियों का मूर्ति रूप में प्रकट होना श्रद्धालुओं के लिए अलौकिक अनुभूति का केंद्र बना। राजयोग के नियमित अभ्यास से तन और मन को स्थिर कर बिना पलक झपकाए मूर्ति रूप में विराजित ब्रह्माकुमारी बहनों को देखकर दर्शनार्थी आश्चर्यचकित रह गए।

झांकी के माध्यम से संदेश दिया गया कि मां दुर्गा की अष्ट शक्तियां प्रत्येक आत्मा में विद्यमान हैं। राजयोग ध्यान द्वारा इन आंतरिक शक्तियों को जागृत कर जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान और परमात्म स्मृति मन की अशांति दूर कर शांति एवं पवित्रता का अनुभव कराने में सहायक हैं। झांकी में बचपन की शुद्धता और नदी के उद्गम स्थल की पवित्रता का उदाहरण देते हुए जीवन में बुराइयों, अशुद्धियों, नकारात्मकता, व्यसन, ईर्ष्या और द्वेष को त्यागने की प्रेरणा दी गई। शिव की शक्तियों को जीवन में धारण कर पवित्रता, सकारात्मकता और श्रेष्ठ संस्कारों को अपनाना ही नवरात्रि की सच्ची सार्थकता है।



शिव आमंत्रण, नईदिल्ली। ईस्ट विनोद नगर स्थित ब्रह्माकुमारीज सेंटर में नवरात्रि पर्व पर नौ चैतन्य देवियों की आकर्षक झांकी सजाई गई। निगम पार्षद देवेंद्र कुमार शामिल हुए। गाजीपुर से पधारी बीके सुधा दीदी एवं ईस्ट विनोद नगर सेंटर की संचालिका ममता दीदी ने उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की।

शान्ति शिखर में सजी चैतन्य नौ देवियों की झांकी



शिव आमंत्रण, रायपुर, छग।

नवा रायपुर के सेक्टर-20 स्थित शान्ति शिखर में ब्रह्माकुमारीज द्वारा सजाई गई नौ चैतन्य देवियों की झांकी का शुभारम्भ नगरीय निकाय के प्रमुख सचिव आईएएस सोनमणि बोरा, एनआरडीए के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आईएएस चन्दन कुमार, 155 इन्फेन्ट्री बटालियन के कर्नल राजकुमार बिश्नोई, रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी और ब्रह्माकुमारी रश्मि दीदी ने दीप प्रज्वलित कर किया।

प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने झांकी की सराहना करते हुए कहा कि चैतन्य देवियों की झांकी अत्यंत दर्शनीय और जीवन्त है। राजयोग साधना में लीन ब्रह्माकुमारी बहनों को अपलक निहारना अद्भुत अनुभव है, जो मेडिटेशन से ही संभव है। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी में आध्यात्मिकता के माध्यम से जीवन की समस्याओं का समाधान प्राप्त करने का संदेश दिया गया है।

एनआरडीए के सीईओ चन्दन कुमार ने कहा कि झांकी में नारी शक्ति के अस्तित्व और महत्व को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जो अविस्मरणीय है। कर्नल राजकुमार बिश्नोई ने कहा कि नवरात्रि के पहले दिन इतनी सुंदर चैतन्य झांकी के दर्शन करना उनके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने इसे अलौकिक अनुभव बताया। रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने बताया कि शान्ति शिखर में प्रतिवर्ष नवरात्रि पर चैतन्य देवियों की झांकी सजाई जाती है, जिसे जनता खूब पसंद करती है।



नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन, आबू रोड

परिवर्तन की जीवन यात्रा

शिव आमंत्रण, आबूरोड। जीवन मतलब परिवर्तन। यहां कुछ भी स्थायी नहीं है। जैसे दिन के बाद रात, बचपन के बाद युवावस्था और बुढ़ापा आना निश्चित है। इसी तरह सुख के बाद दुख भी निश्चित है, क्योंकि इस सृष्टि रंगमंच पर कुछ भी स्थायी नहीं, जिसे अपना माना जाए, यहां तक कि जिस पांच तत्वों की देह पर हम इतना नाज और अभिमान करते हैं एक दिन वह भी जर्जर होकर इन्हीं पांच तत्वों में विलीन हो जाती है।



स्थायी, शाश्वत और अनंत कुछ है तो वह हैं परमात्मा। सृष्टि चक्र में प्रकृति और पुरुष (आत्मा) दोनों परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरती हैं। एक मात्र परमात्मा ही हैं जो इस परिवर्तन से अप्रभावित रहते हैं। चूंकि आत्मा, अजर, अमर, अविनाशी है लेकिन वह भी कालखंड में अनेक शरीर धारण कर अपना पार्ट बजाती है और सुख-दुख की अनुभूति कर्मों के परिणामस्वरूप प्राप्त करती है।

इस परिवर्तनशील संसार को जो व्यक्ति जितनी जल्दी स्वीकार कर इसके मर्म को गहराई से जान लेता है, तो उसकी जीवन यात्रा आसान हो जाती है। समय के साथ कदमताल करते हुए चलना और जीवन में घटित हो रहीं घटनाओं, परिस्थितियों के अनुकूल खुद को सामंजस्य बिठाते हुए आगे निकल जाना ही परिवर्तन यात्रा है। 'परिवर्तन संसार का नियम है' इस ध्येय वाक्य की गहराई में छिपे निहितार्थ को जानने, समझने के बाद जीवन के कई पहलुओं की गुत्थी अपने आप सुलझ जाती है।

क्या हम स्वयं को बदल रहे हैं?

यहां विचारणीय प्रश्न है कि परिवर्तन की इस यात्रा में क्या हम स्वयं को सकारात्मक रूप से समय के साथ बदल रहे हैं? नए विचारों का जीवन यात्रा में स्वागत कर रहे हैं? नई चीजों को सीखने के प्रति सजग, जागरूक और लालायित हैं? या फिर जीवन समुद्र के पानी की तरह ठहर सा गया है। जहां ठहराव होगा, वहां एक समय के बाद बदबू, गंदगी का होना स्वाभाविक है। नदी की धारा परिवर्तन की यात्रा का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण है जो तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अपनी दिशा से कभी भटकती नहीं है।

संस्कार परिवर्तन सबसे अहम

परिवर्तन की इस प्रक्रिया में जीवन में सबसे अहम और महत्वपूर्ण कारक होता है संस्कार परिवर्तन। जब दिव्यगुणों की धारणा की ओर मन-बुद्धि एकाकार होने लगती है तो संस्कार परिवर्तन या संस्कार शुद्धि की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से शुरू हो जाती है। दिव्यगुणों का मनन, चिंतन, अध्ययन उन्हें स्वभाव में लाकर कर्मों में चरितार्थ करता है। जब कर्मों की निरंतरता एक लंबे काल तक नियमित रूप से अनवरत चलने लगती है तो परिवर्तन की प्रक्रिया कड़े से कड़े दुखदायी संस्कारों को पिघलाकर पत्थर से पारस बना देती है। दिव्य गुण ही संस्कार परिवर्तन की चाबी हैं। जीवन में आध्यात्म और राजयोग ध्यान को शामिल कर लेने के बाद उपहार के रूप में दिव्यगुणों रूपी गुलदस्ता हमें प्राप्त हो जाता है।

सफलता-असफलता परिवर्तन पर निर्भर-

हम देखते हैं कि कई बार योग्य, अनुभवी और पढ़े-लिखे लोग जीवन में उतनी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं जितने कि वह उसके योग्य थे। जबकि कम पढ़े-लिखे और कम अनुभवी व्यक्ति जीवन की ऊंचाइयों पर पहुंच जाते हैं। इसके पीछे मुख्य बात यह निकल कर आती है कि उसने परिवर्तन को स्वीकार किया। अपनी रोजगार, व्यवसाय के अनुकूल खुद को ढाल कर अपनी आदतों, व्यवहार को परिवर्तित कर लिया। उसके मर्म को समझ लिया। वहीं जो ज्यादा पढ़ा-लिखा था वह अपने कड़े संस्कारों के वश परिवर्तन की इस प्रक्रिया को स्वीकार ही नहीं कर पाया। ऐसी स्थितियों में वह व्यक्ति विकास के क्रम में पीछे रह जाता है। यही बात जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होती है। फिर चाहे वह संबंध हों या स्वभाव-संस्कार।

आध्यात्म अर्थात् परिवर्तन

आध्यात्म अर्थात् आत्मा का अध्ययन। आत्मा के दिव्य गुण, शक्तियों को जानने, समझने के बाद जीवन में परिवर्तन करना आसान हो जाता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में परमात्मा की याद और परमात्मा का साथ, वरदान बनकर जीवन के लक्ष्य को पूर्णतः की ओर ले जाते हैं। वर्तमान समय सृष्टि के इसी महापरिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है, जिसमें स्वयं परमपिता परमात्मा अवतरित होकर मनुष्यात्माओं को सहज राजयोग की शिक्षा देकर नई सृष्टि में चलने की तैयारी करा रहे हैं। सृष्टि की इस अद्भुत और परिवर्तनकारी घटना को जो व्यक्ति जितनी जल्दी समझकर उसे आत्मसात कर लेगा उसकी जीवन यात्रा उतनी ही आसान, सुखद और आनंदमय बन जाएगी।

जीवन प्रबंधन



बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

अपनी खुशी की चाबी किसी दूसरे को नहीं दें, सदा अपने पास ही रखें

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

जब आत्मा अपने भीतर लौटती है, तभी सच्चा भावनात्मक उपचार आरंभ होता है। हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए कितने प्रयास करते हैं। चोट लगती है तो दवा लगाते हैं, दर्द होता है तो उपचार कराते हैं, लेकिन जब मन को चोट लगती है, जब किसी के शब्द हृदय को आहत करते हैं, जब अपने ही लोगों का व्यवहार भीतर तक तोड़ देता है, तब हम अक्सर उस दर्द को चुपचाप अपने भीतर जमा करते रहते हैं। चेहरे पर मुस्कान होती है, लेकिन मन के किसी कोने में पीड़ा जीवित रहती है। यही भावनात्मक अशांति धीरे-धीरे हमारे विचारों, संबंधों और जीवन की प्रसन्नता को प्रभावित करने लगती है। इसी आंतरिक पीड़ा से मुक्त होने की प्रक्रिया को Emotional Healing अर्थात भावनात्मक उपचार कहा जाता है। यह केवल बीती हुई घटनाओं को भूल जाने का नाम नहीं, बल्कि उन घटनाओं से जुड़ी पीड़ा को समझने, स्वीकार करने और स्वयं को उससे मुक्त करने की यात्रा है।

दूसरों का व्यवहार, मेरे मन की जिम्मेदारी क्यों बने?

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति हमारे अनुसार व्यवहार नहीं करेगा। कोई हमारी भावनाओं को समझेगा, कोई हमारी उपेक्षा करेगा। कोई प्रशंसा करेगा, तो कोई आलोचना। यदि हमारी खुशी दूसरों के व्यवहार पर निर्भर है, तो हमारे मन की चाबी हमेशा किसी दूसरे के हाथ में रहेगी। राजयोग की आध्यात्मिक दृष्टि हमें यह स्मृति दिलाती है कि मैं केवल यह शरीर नहीं, बल्कि शांत, चेतन और गुणवान आत्मा हूं। सामने वाला व्यक्ति अपने संस्कारों, परिस्थितियों और मनःस्थिति के अनुसार व्यवहार कर सकता है, लेकिन उस व्यवहार के प्रति अपने विचारों को दिशा देना मेरे हाथ में है।

इसका अर्थ गलत व्यवहार को उचित ठहराना नहीं है। इसका अर्थ है कि हम अपनी शांति को उस व्यवहार की कैद में न रखें। जहां आवश्यक हो, वहां स्पष्ट सीमाएं बनाएं, अन्याय का विरोध करें और उचित कदम उठाएं, लेकिन अपने भीतर घृणा और प्रतिशोध को स्थायी स्थान न दें।

स्वीकार करना ही उपचार की शुरुआत है

कई बार हम स्वयं से भी अपनी भावनाएं छिपाते हैं। हम कहते हैं कि हमें कोई फर्क नहीं पड़ता, जबकि भीतर दुख होता है। हम स्वयं को मजबूत दिखाने के लिए अपनी पीड़ा को दबा देते हैं। लेकिन दबाई हुई भावना अपने आप समाप्त नहीं हो जाती। भावनात्मक उपचार का पहला कदम है- स्वयं के प्रति ईमानदार होना। यदि दुख है, तो उसे पहचानें। यदि मन में क्रोध है, तो उसके कारण को समझें। यदि किसी घटना ने विश्वास को चोट पहुंचाई है, तो अपने अनुभव को स्वीकार करें। स्वीकार करने का अर्थ हार मानना नहीं है। इसका अर्थ है कि अब मैं वास्तविकता से भागने के बजाय उसे समझने के लिए तैयार हूं। जब हम अपनी भावनाओं को बिना स्वयं को दोष दिए देखते हैं, तब परिवर्तन की संभावना जन्म लेती है।

क्षमा करें, लेकिन अपनी गरिमा न खोएं

क्षमा भावनात्मक उपचार का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। जब हम किसी के प्रति लंबे समय तक क्रोध रखते हैं, तो उस व्यक्ति की स्मृति बार-बार हमारे मन में लौटती है। घटना बीत चुकी होती है, लेकिन हम उसे विचारों में दोहराते रहते हैं। इस प्रकार बीते हुए कल को हम अपने आज की शांति छीनने देते हैं। क्षमा का अर्थ यह नहीं कि सामने वाले ने जो किया, वह सही था। इसका अर्थ है कि मैं उस घटना को अपने वर्तमान जीवन पर अनंत अधिकार नहीं दूंगा। मैं अपने मन को प्रतिशोध की आग से मुक्त करने का प्रयास करूंगा। कभी-कभी क्षमा करने में समय लगता है। इसलिए स्वयं पर दबाव न डालें। जहां आवश्यक हो, दूरी बनाए रखें और अपनी सुरक्षा तथा आत्मसम्मान की रक्षा करें। सच्ची क्षमा भीतर की स्वतंत्रता है, स्वयं के प्रति अन्याय नहीं।

राजयोग : आत्मा से जुड़ने का अभ्यास

राजयोग मेडिटेशन हमें बाहरी परिस्थितियों से ध्यान हटाकर अपने आंतरिक स्वरूप से जुड़ने का अवसर देता है। कुछ क्षण शांत बैठकर स्वयं को एक शांत ज्योति-बिंदु आत्मा के रूप में अनुभव करें। अपने भीतर शांति, प्रेम, शक्ति और पवित्रता के गुणों को जागृत करने का अभ्यास करें। परमात्मा शिव को शांति और प्रेम का असीम स्रोत मानकर उनकी स्मृति में बैठें। मन में संकल्प करें- मैं शांत आत्मा हूं। मैं अपने अतीत से सीख सकता हूं, लेकिन अतीत को अपना वर्तमान निर्धारित नहीं करने दूंगा। मैं दूसरों के लिए शुभभावना रख सकता हूं और साथ ही अपने आत्मसम्मान की रक्षा भी कर सकता हूं। नियमित अभ्यास से व्यक्ति अपने विचारों को पहचानने, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर विचार करने और अधिक संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्राप्त कर सकता है।

स्वयं को वही प्रेम दें, जिसकी अपेक्षा दूसरों से करते हैं

हम दूसरों से चाहते हैं कि वे हमें समझें, सम्मान दें और हमारी भावनाओं का ध्यान रखें। लेकिन क्या हम स्वयं के प्रति भी उतने ही संवेदनशील हैं? क्या हम अपनी गलतियों के लिए स्वयं को क्षमा कर पाते हैं? क्या हम अपनी कमियों के बावजूद स्वयं को सम्मान देते हैं? आत्मप्रेम का अर्थ स्वार्थ नहीं है। इसका अर्थ है अपनी भावनाओं, आवश्यकताओं और गरिमा का सम्मान करना। स्वयं से कहें- मैं पूर्ण नहीं हूं, लेकिन सीखने योग्य हूं। मेरे जीवन में कठिन अनुभव आए हैं, लेकिन वे मेरी संपूर्ण पहचान नहीं हैं। मैं अपने अतीत से बड़ा हूं और अपने भीतर परिवर्तन की क्षमता रखता हूं। यदि भावनात्मक पीड़ा लंबे समय तक बनी रहे, दैनिक जीवन को प्रभावित करे या असहनीय हो जाए, तो किसी योग्य मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ की सहायता लेना भी आत्मसम्मान और आत्मदेखभाल का महत्वपूर्ण कदम है।



आज से एक नया संकल्प-

भावनात्मक उपचार कोई एक दिन में पूरी होने वाली प्रक्रिया नहीं है। यह प्रतिदिन अपने विचारों को समझने, नकारात्मक भावनाओं को स्वस्थ तरीके से व्यक्त करने, आवश्यक सीमाएं निर्धारित करने और स्वयं को शांति की ओर ले जाने का अभ्यास है। याद रखें, हमें हर घटना को बदलने की शक्ति नहीं होती, लेकिन उसके बाद स्वयं को संभालने के लिए सहायता लेना, नई समझ विकसित करना और आगे बढ़ना संभव है। जब हम अपने मन में जमा पीड़ा को समझना शुरू करते हैं, तब दूसरों को बदलने की बेचैनी कम होने लगती है। जब हम अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानते हैं, तब परिस्थितियां हमारे जीवन की दिशा तय करने वाली एकमात्र शक्ति नहीं रहतीं।

जीवन को फिर से विश्वास, प्रेम और शांति के साथ...

सच्ची Emotional Healing वही है, जब अतीत की स्मृति तो रहती है, लेकिन उसकी पीड़ा धीरे-धीरे हमारे वर्तमान पर अपना अधिकार खोने लगती है। हम जीवन को फिर से विश्वास, प्रेम और शांति के साथ स्वीकार करना सीखते हैं। यही आत्मिक जागृति है, यही स्वयं की ओर लौटने की यात्रा है और यही स्वस्थ, संतुलित एवं सुखी जीवन की नींव है। साथ ही अपनी रोजाना की दिनचर्या में कुछ पल एकांत में निकालें और राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करें, इससे माइंड पावर बढ़ेगी और परमात्म मदद मिलेगी। जीवन आनंदमय, सुखमय बन जाएगा। ब्रह्माकुमारीज़ में आज लाखों लोग इसका जीवंत उदाहरण हैं।

समस्या- समाधान

मन पर विजय ही जीवन की सबसे बड़ी विजय है

राजयोगी बीके सूर्य
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक



शिव आमंत्रण, आबू रोड/राज.।

मनुष्य ने संसार में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। विज्ञान, तकनीक और भौतिक संसाधनों के क्षेत्र में उसने अद्भुत प्रगति की है, लेकिन अपने ही मन को शांत रखना आज भी एक बड़ी चुनौती है। कभी अतीत की घटनाएं मन को परेशान करती हैं, कभी भविष्य की चिंताएं बेचैन करती हैं और कभी दूसरों के व्यवहार से मन अशांत हो जाता है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि आखिर मन को जीतने की अद्भुत विधि क्या है? राजयोग की आध्यात्मिक दृष्टि कहती है कि मन को जीतने के लिए उससे युद्ध करने की आवश्यकता नहीं, बल्कि उसे सही दिशा देने की आवश्यकता है। मन हमारा शत्रु नहीं है। वह हमारी विचार शक्ति का माध्यम है। जब उसे श्रेष्ठ विचार मिलते हैं, तो वह हमारा मित्र बन जाता है और जब उसे नकारात्मकता का भोजन मिलता है, तो वही मन हमें दुखी करने लगता है।

पहचानें अपने वास्तविक स्वरूप को-

मन को जीतने की पहली विधि है—स्वयं को पहचानना। सामान्यतः हम स्वयं को शरीर, पद, प्रतिष्ठा, संबंधों और उपलब्धियों से जोड़कर देखते हैं। लेकिन राजयोग हमें आत्मिक स्मृति का अभ्यास कराता है कि मैं एक चेतन आत्मा हूं, शांति, प्रेम, आनंद और शक्ति मेरे मूल गुण हैं। जब हम स्वयं को आत्मा समझकर व्यवहार करते हैं, तब छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया देने की आदत धीरे-धीरे कम होने लगती है। कोई हमारी प्रशंसा करे या आलोचना, हमें अपनी आंतरिक स्थिरता बनाए रखने का अभ्यास करना चाहिए। यही आत्मस्वमान की शक्ति है।

विचारों को दें सही दिशा

मन में विचारों का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। यदि हम हर विचार को सत्य मानकर उसके पीछे चलने लगें, तो मन हमें कभी अतीत में ले जाएगा और कभी भविष्य में। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने विचारों के प्रति जागरूक बनें। जब मन में क्रोध आए, तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय कुछ क्षण रुकें। स्वयं से पूछें—क्या मेरी प्रतिक्रिया परिस्थिति को बेहतर बनाएगी? क्या मैं शांति से अपनी बात कह सकता हूं? यह छोटा-सा विराम हमारी संकल्प शक्ति को जागृत करता है।

राजयोग मेडिटेशन : मन को जीतने का अभ्यास

राजयोग मेडिटेशन मन को परमात्मा से जोड़ने की सहज विधि है। शांत स्थान पर बैठकर स्वयं को प्रकाशमय आत्मा के रूप में अनुभव करें। परमात्मा शिव को शांति, प्रेम और शक्ति का सर्वोच्च स्रोत मानते हुए उनकी स्मृति में मन को स्थिर करें। कुछ समय के लिए अपने भीतर यह संकल्प दोहराएं—मैं शांत स्वरूप आत्मा हूं। मैं परिस्थितियों का दास नहीं, बल्कि अपने विचारों का सजग संचालक हूं। परमात्मा की शक्ति से मैं अपने मन को श्रेष्ठ दिशा दे सकता हूं। नियमित अभ्यास से विचारों को समझने, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को संभालने और आंतरिक शांति विकसित करने में सहायता मिल सकती है।

मन को खाली नहीं, श्रेष्ठ विचारों से भरें

मन को जीतने का अर्थ विचारों को जबरदस्ती रोकना नहीं है। इसका अर्थ है व्यर्थ और नकारात्मक विचारों के स्थान पर ज्ञान, प्रेम, करुणा और शुभभावना के विचारों को स्थान देना। जिस प्रकार स्वच्छ भोजन शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक होता है, उसी प्रकार श्रेष्ठ विचार मन को स्वस्थ दिशा देते हैं। दिन की शुरुआत परमात्म स्मृति से करें। दूसरों की कमियों को देखने के बजाय उनके गुणों को पहचानें। रात को सोने से पहले दिनभर के विचारों का निरीक्षण करें और स्वयं को अनावश्यक चिंता से मुक्त करने का संकल्प लें। मन पर विजय एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि प्रतिदिन का आध्यात्मिक अभ्यास है। जब हम अपनी आत्मिक पहचान को स्मृति में रखते हैं, विचारों को दिशा देते हैं और परमात्मा से शक्ति प्राप्त करने का अभ्यास करते हैं, तब परिस्थितियों के बीच भी शांति बनाए रखना संभव होने लगता है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Oct. 2026
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र